श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 12 दिसम्बर 2020 मूल्य : 20 रु.

अपनी दुकान, अपनों के लिए

दाम में कम
क्वालिटी में दम

RCM
Transforming Lives, Transforming India

100% शुद्ध
सामान

आरसीएम से जुड़कर अपने सपने करें साकार

पार्ट टाईम जॉब से कमाईये 1000 रु. से लाखों रूपये

CALL NOW : 9530031870, 7011160452

ज्वाइन होने के लिए आधार कार्ड, पैन कार्ड, बैंक पासबुक, फोटो, नॉमिनी का नाम, जन्म तिथि प्रमाण पत्र, साथ में पहली बार 1000+ रू के किसी भी आरसीएम प्रोडक्ट्स की खरीददारी करनी होती है। इसके बाद आपको एक आईडी मिल जाती है वो पूरे भारत में मान्य है इसी आईडी से आप पूरे भारत में अपनी टीम के साथ नेटवर्क बनाकर बिजनेस कर सकते हैं और घर बैठे फ्री में बिना इन्वेस्टमेंट करके अपने सभी सपने पूरे कर सकते हैऔर 1000 से लेकर लाखो अनलिमिटेड इनकम ले सकते है

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

आपका जिम्मेदार सहयोगी

मनोहरलाल स्वामी

M. 7011160452
9530031870

श्री धनावंशी हित

धनावंशी चेतना की मासिक पत्रिका

वर्ष : 1 अंक : 12 दिसम्बर 2020 मूल्य : 20/- रुपये

धमाळ

सुणल्यो भाई रे थारै धनावंस में सुस्ती छाई रे ।।

1 धनावंस रो एक एक बालक सांचो धरम सिपाही रे ।
सब धरमां रो धरम गुरू इतिहास गवाही रे ।

2 जद इसलाम बढ्यो भारत में,आंच धरम पर आई रे ।
रामानन्द गुरू प्रकट होय कर,लाज बचाई रे ।।

3 सब संतां नें दीन्ही प्रेरणा,हरि भगती बतलाई रे ।
हिन्दू धर्म हारो मत भायां थांनै राम दुहाई रे ।।

4 रंका,पीपा, कूबा,फरसा,अपणी जात बढाई रे ।
धनै भगत तो धनावंश की फौज बणाई रे ।।

5 धनावंश मारग क्यूं भूल्यो,धरम रीत बिसराई रे ।
छोड़ समाज करै बदनामी,लोग लुगाई रे ।।

6 नितरा छोडा छाडी, भाजणा,अपणा लड़का, बाई रे ।
होवै काळजै दर्द शरम नै दूर भगाई रे ।।

7 फैशन व्यशन वर्णशंकरता ,छोड़ो चाल पराई रे ।
उत्तम कुल कै लाग होवै औरां रै कांई रे ।।

अनुक्रमणिका

* सम्पादकीय–
  धनावंश की पंथीय पहचान जरुरी/04
* धनावंश का नेतृत्व सुदृढ़ हो/05
* आलेख–
  धना भगत/07
  मेरा धनावंश/10
  धनावंशी स्वामी समाज जोधपुर/13
  आयुर्वेद के देवता धन्वन्तरी/15
  धनावंशी स्वामी समाज बीकानेर/17
  वैष्णव उपनिषद/19
  मेरे धनावंश समाज की वास्तविक स्थिति/22
  धनावंश में परमात्म प्राप्ति/24
  अपने पंथ को समझे/26
  धनावंशी समाज की प्राथमिकता/27
* आपके पत्र–आपकी भावनाएं/28

पावन सन्निधि
श्री ठाकुरजी महाराज
भक्त शिरोमणि श्री धनाजी

मानद परामर्श
परिव्राजक श्रीसीतारामदास स्वामी

सम्पादक एवं प्रकाशक
चेतन स्वामी

सहायक सम्पादक
प्रशांत कुमार स्वामी, फतेहपुर
श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़
(अवैतनिक)

अकाउंट विवरण
Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

सम्पादकीय कार्यालय
श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन, कालूबास,
श्रीडूंगरगढ़–331803
(बीकानेर) राज.
M.: 9461037562
email:chetanswami57@gmail.com

सम्पादक प्रकाशक
चेतन स्वामी द्वारा प्रकाशित
तथा महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़
से मुद्रित।

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के स्वयं के हैं। उनसे सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। रचना की मौलिकता व वैधता का दायित्व स्वयं लेखक का है, विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र श्रीडूंगरगढ़ रहेगा।

मूल्य : एक प्रति 20/– रु.
वार्षिक 200/– रु.

सम्पादकीय

धनावंश की पंथीय पहचान जरूरी है

प्रत्येक जाति अपनी सामाजिक उन्नति चाहती है। ऐसा एक भी समाज या जाति नहीं मिलेगी, जो अपनी सामाजिक उन्नति से गाफिल हो गई हो। धनावंश एक जाति भी है और पंथ भी है। यानी धनावंश दोहरे मानदंड का निर्वाह कर रहा है। एक तरफ यह वैष्णव पंथ है, दूसरी तरफ एक सुदृढ़ जाति भी है। जिसके अपने आचार विचार और रीतियां हैं। जाति के रूप में यह अपनी परंपराओं को कायम रखे हुए है। किंतु बड़े दुख के साथ कहना पड़ता है कि पंथ के रूप में यह अपनी परंपराओं को भूलता जा रहा है। और इस बात पर जोर देकर कहना चाहिए कि तेजी से भूलता जा रहा है। इसे अपने जातीय और पंथीय दोनों दायित्वों का निर्वाह भली प्रकार करना चाहिए। अगर धनावंश पंथ मजबूत होगा तो इसका जातिगत स्वरूप भी सुदृढ़ होगा। केवल धनावंश ही अकेला पंथ नहीं है, जो दोहरे दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। धनावंश की भांति दूसरे अनेक वैष्णव पंथ हैं, जो अब जाति के रूप में भी प्रतिष्ठित हो चुके हैं। और अपनी परंपराओं का निर्वाह पूरी सजगता से कर रहे हैं। क्यों न करें? ये सभी समाज अपने धार्मिक संगठनों को मजबूत बनाए हुए हैं। एक तरह से इनके धार्मिक संगठन ही नीति निर्धारक संस्था के रूप में काम कर रहे हैं। संपूर्ण जाति पंथ प्रवर्तित धार्मिक आचरणों को धारण करती है,पालन करती है। इसलिए ऐसे संप्रदायों की राष्ट्रीय पहचान बनी है। धनावंश को भी अपने पंथ के स्वरूप को उन्नत बनाना चाहिए। धनावंश की पंथीय पहचान एकदम लुप्त हो जाए, उसके पूर्व ही समाज के नुमाइंदों को इसकी फिक्र करनी चाहिए। अन्यथा बाद के वर्षों में, पछताने के अलावा इस समाज के हाथ में कुछ नहीं रह जाएगा। शीघ्र ही समाज की धार्मिक छवि विनिर्मित करने के लिए सबको प्रयत्नशील होना चाहिए। इसमें देरी अपेक्षित नहीं है।

कृपाकांक्षी
चेतन स्वामी

अनुरोध

जातीय शैथिल्य के मायने

हमारे भारतवर्ष में जातियों के स्वरूप बदल रहे हैं। तथा निरंतर इस बात को प्रोत्साहित भी किया जाता है कि जाति प्रथा नहीं रहनी चाहिए। अब यह जाति में रहने वाले व्यक्ति की मानसिकता पर निर्भर करता है कि वह अपने परिवार के जातीय स्वरूप को अक्षुण्ण रखे अथवा न रखे। जातियां टूट रही है, और अध्ययन यह बताता है कि वही जातियां टूट फूट रही है, अथवा अपना स्वरूप बदल रही है, जिन जातियों में धार्मिक आचार और अपनी परंपराओं के प्रति आग्रह नहीं रह गया है। जिन जातियों में अपनी धार्मिक परंपराओं का आग्रह है। वे आज भी टूट नहीं पाती हैं। जातियां टूटने के पीछे सबसे बड़ा कारण वैवाहिक शैथिल्य होता है। जिस परिवार में अंतरजातीय विवाह को मान्यता दी जाती है। वहां सबसे पहले अपनी जाति को ही भूलना पड़ता है। स्वयं की जाति को भूलते ही जातीय स्वरूप अपने आप ही विध्वंस हो जाता है। पूर्वजों का मानना रहा है कि अपनी जाति का घेरा एक तरह से सुरक्षात्मक घेरा होता है, और स्वजाति में किए हुए वैवाहिक संबंध अधिक टिकाऊ होते हैं। वहां परस्पर एक दूसरे की भावनाओं को समझा जा सकता है। बहुत सारे सम्बन्धी भी निकट दूर के एक दूसरे से जुड़े हुए होते हैं। ऐसे में किसी भी प्रकार की ऊंच नीच होने पर उलाहना दिया जा सकता है। समाज की पंचायत बैठाई जा सकती है। लेकिन जब भी अपनी जाति से कोई आदमी बिछड़ता है, अथवा टूटता है, तो वह कहीं न कहीं अकेला रह जाता है। अपनी जाति हर तरह से संरक्षण देती है। लेकिन वह संरक्षण भी तभी प्राप्त हो सकता है, जब जाति के संगठन आत्मीय भाव से काम करते हों। तथा जाति के लोगों का परस्पर मिलना जुलना अथवा सभा सम्मेलन होते रहते हों। जिस जाति में संगठनात्मक ताकत नहीं होती है, वह भी अनेक दूसरी जातियों के मुकाबले में पिछड़ जाती है।

उन्नति की क्षमता रखने वालों पर ही समय समय पर आपत्ति आती है ।

धनावंश का नेतृत्व सुदृढ़ हो

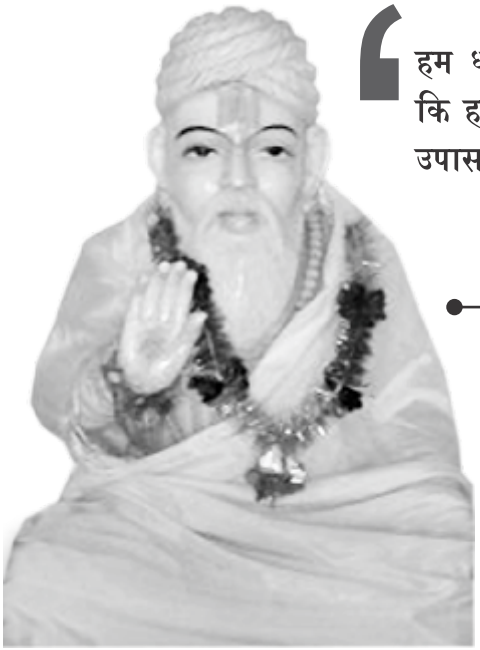

हम धनावंशियों का बड़ा सौभाग्य है कि हम धनाजी जैसे भगवान के परम उपासक के शिष्य हैं।

रामचंद्र स्वामी
स्वामियों की ढाणी

बहुत बड़ा नहीं तो, एकदम छोटा पंथ भी नहीं है–धनावंश। धनावंशी स्वामी समाज वर्तमान में सभी क्षेत्र में तरक्की कर रहा है तो यह अपनी साम्प्रदायिक पहचान के क्षेत्र में पिछड़ा हुआ क्यों रहे और कब तक रहे। मानो या मत मानो–धनावंश की धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक उन्नति का मार्ग संत प्रवर धनाजी महाराज की स्वीकार्यता और मान्यता के साथ खुलता है। धनाजी, धनावंश समाज के संस्थापक गुरु हैं। हम धनावंशियों का बड़ा सौभाग्य है कि हम धनाजी जैसे भगवान के परम उपासक के शिष्य हैं। उनके अनुयायी होना, हमारे लिए बड़े गौरव की बात होनी चाहिए। धनाजी को न माननेवाले लोग अज्ञानी हैं, उन्हें धर्म, दर्शन, सम्प्रदाय जैसे विषयों का ज्ञान नहीं है।

किसी भी समाज की उन्नति उसके शैक्षिक प्रसार पर टिकी हुई होती है। जो समाज जितना अधिक शिक्षित हो गया, वह उतना ही अधिक आगे बढ़ गया। शिक्षा हर प्रकार की उन्नति का मार्ग खोलती है। आज का युग शिक्षा का युग है। प्रत्येक धनावंशी बालक–बालिका को अनिवार्यत: शिक्षा मिले। समाज को इस सम्बन्ध में दृढ़ निश्चय करना चाहिए कि किसी भी बालक को शिक्षा से वंचित नहीं रहने दिया जायेगा। औपचारिक शिक्षा के साथ ही धार्मिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों से भी बच्चों को परिचित कराया जाए, इस तरह का ज्ञान देनेवाली प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाए। जब तक अध्ययनशीलता नहीं बढ़ेगी, हम अपनी साम्प्रदायिक परम्पराओं से भी अनभिज्ञ रहेंगे।

धनावंश में नेतृत्व की कमी बहुत खलती है। इस समाज को सर्वमान्य नेतृत्व की आवश्यकता है और इसके लिए राज्य स्तरीय संस्था का गठन किया जाए। उस संस्था से समाज के सभी उत्साही और अनुभव सिद्ध लोगों को जोड़ा जाए तथा समाजोत्थान की अनेक योजनाओं को मूर्त रूप दिया जाए। केन्द्रीय संस्था की स्थापना हमारे समाज की प्राथमिक जरुरत है। संस्था न होने से हम किस बैनर के नीचे कार्य करें।

समाज के रीति–रिवाज तथा अन्यान्य सामाजिक आचरणों को नियंत्रित करने के लिए हमारी बैठकें होनी चाहिए। वर्ष में दो सामाजिक बैठकें अत्यावश्यक है, इसमें अधिकाधिक बौद्धिक जन इकट्ठे होकर आगे की योजनाओं को मूर्त रूप देने का कार्य करें। परस्पर मिलने–बैठने, चिंतन करने से समाज के समस्त मुद्दे हल हो सकते हैं। एक–एक उपयोगी कार्य को हाथ में लेते जाएं और उसे चरम परिणति तक पहुंचाने का काम करें तो कोई भी चीज मुश्किल नहीं है।

सुखी होने के चक्कर मे, जो पूरी ज़िंदगी दुखी रहता है, उसी का नाम इन्सान है।

भूखे भजन न होई गोपाला

संत पीपाजी का एक प्रसिद्ध पद है–.
राम तेरी भूखा भक्ति न होई।
भोजन बिन न पखावज बाजे, नाद न रीझे कोई ।।टेक।। आठ अबारी आठ सवारी सोलह दे गोपाला।
इतना मांही एक घटावे तो आ ले थारी माला।।
लावन लाडू सेव सुहाली लापसड़ी पंचधारी।
इतना देस्यो देव दयाकारि, तो होसी भक्ति थारी।।
रोटी बिना न रंग रहे माधो पाखंड लोग पतीजै।
पीपो कहे सुण अन्तरयामी, भक्ति अखंड मोहि दीजे ।।

यह पद मुझे विद्वान लेखक स्व. नरोत्तम दासजी स्वामी के संतवाणी संग्रह के बडे गुटके में से बीकानेर के विद्वान शोध लेखक स्व. श्री अगरचन्दजी नाहटा से प्राप्त हुआ था। जयपुर स्थित दादू महाविद्यालय के हस्तलिखित ग्रन्थों में भी मैंने इस पद को देखा है । जोधपुर के स्व. गिरधारीजी राखेचा द्वारा प्रकाशित श्री पीपाजी महाराज की परचई और वाणी पुस्तक में भी यह संकलित है ।

मैं विचार में पड़ गया कि संत पीपा जी का जन्म गढ़ गागरौन के वैभवशाली राज घराने में हुआ था। अपनी शूरवीरता और बाद में अपने संत जीवन के कारण सारे देश में उनका यश व्याप्त होगया था, तो फिर संन्यास जीवन में अपने भोजन के लिये प्रभु से पुकार उन्हें क्यों करनी पड़ी? अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि पीपाजी के समकालीन व मध्यकाल के अन्य संतों को भी जीवन निर्वाह के लिये अनेक संकटों का सामना करना पड़ा था। उस समय जनता की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं थी। राज्यों में कर वसूल करनेवाले व्यक्ति यमदूत की तरह प्राण हरनेवाले होते थे। लोगों के पास जो जमा पूंजी होती थी, उसे दीवान के समक्ष प्रस्तुत करना पड़ता था। दीवान के बुलाने की आज्ञा की उपेक्षा करने की हिम्मत किसी को नहीं होती थी। कर राशि बकाया होने पर उनके घर जमीन तक जब्त कर लिये जाते थे। इसका उल्लेख संत कबीर ने बड़े मार्मिक शब्दों में किया है–
अपलु पिरानो लेखा देना। आये कठिन दूत जम लेना।।
चलु दरहालु दीवानि बुलाइवा। हरि फुरमानि दरगह का आहुआ।।
करलेउ अरदासि गाव किछ बाकी।
येड निवारि आज की राती ।।

तमाम जीवन अभावग्रस्त रहता था। दुखों से छूटने का कोई साधन नहीं था। झोंपड़ी बनवाने को पैसे तक नहीं थे। (नामदेव संदर्भ आदि ग्रन्थ) भरपेट भोजन नहीं मिलता था। दालि सीधा मांगउ घीउ। हमारा खुशी करे नित जीउ।। (संत धनाजी, सन्दर्भ आदि ग्रंथ)

इस प्रकार भरपेट भोजन के अभाव में भक्ति भी संभव नहीं थी। कबीरजी तो दो सेर आटा, आधा सेर दाल और पाव भर घी के साथ थोड़ा नमक भी चाहते थे–
भूखे भगति न कीजे। यह माला अपनी लीजे।।
दुई सेर मांगउ चूना। पाउ घीउ संग लूना।।
अध सेर मांगउ दाले। मोकउ दोनउ बखत जिवाले ।।
खाट मांगउ चउ पाईड। सिरहाना अबर लुनाई ।।
ऊपर कउ मांगउ सीधा। तेरी भगति करे जनु बीधा ।।
हिन्दी काव्य धारा के पृष्ठ 454 पर उस समय की दुर्दशा पर वर्णित यह उदाहरण भी ध्यान देने याग्य है–
सेर एवक जदू पावेउ छित्ता। मंडा बीस पकावउ जित्ता।। टंकु एक जउ सेधव पाआ। जो हउ रंको सो हउ राजा।

जनरल डिपार्टमेन्ट आफ लेटर्स, कलकत्ता विश्वविद्यालय में उल्लेखित हुए कि मानिक चन्द्र राजा ने अपने किसी मंत्री की सलाह पर लोगों के ऊपर कर बढ़ा दिया और उसके परिणाम स्वरूप लोगों की गाड़ी तक नहीं रही जिससे जीवन निर्वाह के साधन बन्द हो गये, यहां तक कि दूध पीते बच्चों के बिकने की नौबत तक आ गई।। राजा भोज से सम्बन्धित एक किवंदती के अनुसार खराब भोजन मिलने से शूल रोग हो जाता था। लोगों के पास पहिनने के कपड़े तक नहीं थे । तेल के अभाव में सिर पर जटायें बन जाती थीं।

एक भोजपुरी गीत में कहा है कि परिवार रोजगार करता, दिन भर परिश्रम करता फिर भी भरपेट अन्न नहीं प्राप्त होता था। एक अन्य गीत में कहा है कि खाने के लिये कठिनता से अन्न मिलता । पहनने को फटे पुराने वस्त्र होते थे। सोने के लिये टूटी सी मचान होती थी। तभी तो कबीरजी को भी चार पैरों वाली यानि जो टूटी हुई न हो, चारपाई, रुई से भरी हुई सिरहाने के लिये तकिया तथा ओढ़ने के लिए मोटी लोई मांगने की अरदास करनी पड़ी। इतना मिलने पर ही प्रभु की भक्ति संभव होती थी।

संत पीपाजी का जन्म इसी मध्यकाल की करुणामय स्थिति में हुआ था, तभी तो उन्हें कहना पड़ा– रामतेरी भूखा भक्ति न होई।

संदर्भ: संत कवि पीपाजी :एक अध्ययन
लेखक:– श्रीमान सांवरलाल तंवर
संगीत विशारद

निरंतर सफलता हमें संसार का केवल एक ही भाग दिखाती है, विपत्ति हमें चित्र का दूसरा भाग भी दिखाती है।

आलेख

धना भगत

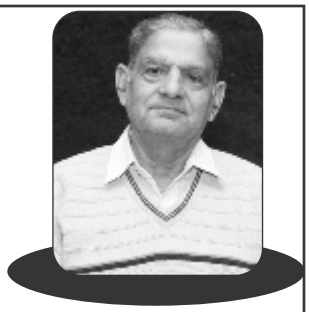

चतुर्भुज वैष्णव
से.नि. प्रधानाध्यापक, जोधपुर

श्री धनावंशी हित मासिक पत्रिका के माध्यम से मैं सभी स्वजातिय बंधुओं की जिज्ञासा एवं जानकारी हेतु धना भगत से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी लिख रहा हूँ। माघ बदी अष्टमी विक्रम सम्वत् 2077 को धना भगत की जयन्ती है। जयन्ती के उपलक्ष में धना भगत के जीवन परिचय को सभी बंधुओं के लिए प्रस्तुत कर रहा हूँ।

धनाजी का सामान्यत: नाम सभी इतिहास धार्मिक एवं हिन्दी की पुस्तकों में धना भगत या धना जाट मुद्रित मिलता है। लेकिन अधिकांश पुस्तकों या भजनों में धना भगत शब्द का उपयोग किया गया है। वर्तमान में इनके गांव का नाम धुआंकला है यही इनका जन्म हुआ था। पूर्व में इस गाँव का नाम खेरीपुर था। धना भगत के एक चमत्कार के कारण इस गांव का नाम खेरीपुर से धुँआकला पड़ा। धुँआकला गांव देवली से 25 मील दूर है जो टोंक जिले के अन्तर्गत आता है। धना भगत का जन्म माघ बदी अष्टमी, शनिवार को हुआ था। एक अंग्रेज लेखक एम.ए. मेकालीफ अपनी पुस्तक द सिक्ख रीलीजन धना का जन्म ईस्वी सन् 1415 अर्थात् विक्रम सम्वत् 1472 माना है। धना भगत को राजा बलि का अवतार मानते है। वामन रूप धारित भगवान ने राजा बलि को यह वचन दिया था। दोनों का पृथ्वी या जमीन सम्बन्धित कार्य स्थल था। विभिन्न धार्मिक एवं ऐतिहासिक पुस्तकों के अध्ययन से यह जानकारी प्राप्त हुई कि धना भगत की जाति जाट थी। कई पुस्तकों एवं भजनों में इन्हें धना जाट नाम से जाना जाता है। धना भगत का गौत्र तेतरवाल था एवं इनकी माता का गौत्र गढ़वाल था। धना भगत के पिता का नाम नगराज था एवं माता का नाम गंगा था। जैसा कि इस दोहे में इनके माता–पिता का नाम व गौत्र पता चलते है।

पिता नगराज मात गंगा गढ़वाल।
तास के पुत्र जनमीयो धनो धेतरवाल।।

इनके परिवार में चार सदस्य थे। पिता नगराज, माता गंगा, धना भगत एवं धनाबाई जो धना भगत की पत्नी थी। धना भगत का व्यवसाय खेती करना था। इनके एक चमत्कार बिना बीज खेती निपजाना से स्पष्ट हो जाता है कि इनका व्यवसाय खेती करना ही था। कहते है कि धनाजी जब 5 वर्ष के थे उस समय उनके घर एक ब्राह्मण आया। ब्राह्मण को नित्य प्रात: ठाकुरजी (सालिगराम)

एक सत्य यह भी है, कि भगवान को मदिरों से ज्यादा हॉस्पिटल में याद किया जाता है।

पूजा पाठ देखकर धना ने भी बालहठ के तहत पूजा के लिए वह मूर्ति मांगी। ब्राह्मण ने अपने पास पड़े एक पत्थर को धना को दे दिया। धना प्रतिदिन प्रात: स्नान कर उस पत्थर की पूजा करता एवं रोटी का भोग लगाता। कई दिनों तक न भगवान ने प्रसाद ग्रहण किया न धना ने प्रसाद लिया। धना का शरीर सूखकर कांटे की तरह हो गया। आखिर भगवान का हृदय पिघला एवं धना को मोहित करने अतिसुन्दर रूप का दर्शन देकर कृतार्थ किया। इसे धना जाट से धना भगत के के रूप में प्रसिद्ध हो गये।

धना भगत ने भक्ति के बल से मात्र 5 वर्ष की आयु में मन को मोहित करने वाला विष्णु भगवान का अति सुन्दर रूप का दर्शन करना, बिना बीज खेती निपजाना, पारिवारिक आर्थिक स्थिति कमजोर होने पर हजारों साधुओं को भोजन करवाना एवं मूर्ति को हठात भोजन करवाना, प्रभु द्वारा धना भगत की गउए चराना, ब्राह्मण को भी ईश्वर के दर्शन करवाना एवं तुम्बों के बीज के स्थान पर गेहूँ निकालना आदि।

धना भगत के गुरु रामानन्द थे। रामानन्द का जन्म विक्रम सम्वत् 1356 के माघ कृष्ण सप्तमी को हुआ था। रामानन्दजी के पिता का नाम पुण्यसदन शर्मा एवं माता का नाम सुशीलादेवी था। ये जाति से कान्य कुब्ज ब्राह्मण थे। धना भगत ने अपने गुरु रामानन्दजी के साथ अनेक धार्मिक यात्राएं कर वैष्णव धर्म का प्रचार किया।

मुगलों के साम्राज्य में हिन्दु एवं वैष्णव धर्म की रक्षा हेतु इन्होंने गुरु रामानन्द के साथ अन्य 40 शिष्यों के साथ धार्मिक यात्राएं की। भक्त पीपा के निमंत्रण पर सभी रामानन्दजी एवं शिष्य गागरोन गढ़ की यात्रा की। इस दोहे से स्पष्ट है–

धन कबीर सैन रैदासा। चालिस भक्त रहे नित पासा।।
गागरोन गये रामानन्दा। पीपा सुमि पायो आनन्दा।।

धनाजी के अभी तक चार पदों (भजनों) का पता चला है जो सिक्ख धर्म की धार्मिक पुस्तक एवं पवित्र पुस्तक गुरु ग्रंथ साहब में संग्रहित है। यह प्राचीन ग्रंथ है एवं अन्य ग्रंथों से बड़ा भी है। अत: इसका नाम आदि ग्रंथ पड़ा। इसमें सिक्खों के गुरुओं के पद एवं अन्य निर्गुणी संतों के पद होने से इसका नाम गुरु ग्रन्थ साहब पड़ा। इसके संकलनकर्ता गुरु अर्जुनदेव थे। यह ग्रंथ संवत 1661 में तैयार हुआ था।

इन्होंने दुनिया को यह बता दिया कि भक्ति मार्ग में गृहस्थ जीवन किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता। कई वर्षों तक गृहस्थ जीवन, खेती व्यवसाय एवं भक्ति करते रहे। अपने अन्तिम समय में ये उत्तर दिशा की ओर प्रस्थान कर गये। एक दोहे के अनुसार–

खेड़ीपुर खारो लागो, उर उपज्यो आनन्द।
धना उतर दिशा रम गया काट मोह को फंद।।

धना भगत पर भी कई वर्षों पहिले एक फिल्म बन चुकी है। इस फिल्म का नाम है किसान और भगवान इस फिल्म को मैने कई बार देखा था जो कि जोधपुर शहर के चित्रा सिनेमा हाल में कई दिनों तक चली। यह फिल्म हिन्दी भाषा में है।

सर्वप्रथम मीरांबाई ने भक्त धना का नाम लिया है। मीरांबाई का जन्म मेडवा ग्राम में संवत 1555 के लगभग हुआ था। अन्य भक्तों में हरिराम व्यास जी जन्म संवत 1567, गुरु रामदास सम्वत् 1600 लगभग अनन्तदास सम्वत् 1645, नाभादास सम्वत् 1642, ध्रुवदास सम्वत् 1630, लतीफ 16वीं शताब्दि, सुन्दरदास सम्वत् 1653, सन्त नापा धरनीदास सम्वत् 1713, प्रियादास सम्वत् 1669, गुलाब साहब सम्वत् 1750, चरनदास सम्वत् 1760, गरीबदास सम्वत् 1774, दयाबाई संवत् 1818 एवं मंगलदास आदि ने भी धना भगत का नाम अपनी रचनाओं में किया है।

धना स्वामी समाज राजस्थान संस्थापक एवं प्रथम अध्यक्ष स्व. श्री बदरीदासजी गोलिया जोधपुर द्वारा धना भगत की जन्म स्थली गांव धुआँ का दौरा किया था।

●●●●●

परिवार हो या संगठन,सब में सफलता का राज़ है,
एक दूसरे के विचारों को धैर्य से सुनना, समझना और सम्मान देना।

भक्त धनाजी

-जे.पी. जाखड़

थोड़ी थोड़ी बात करु, हाथ जोड़ वंदन करुं, गाथा है सालिगराम के ठाठ की।
धूवन ग्राम में जन्म लियो, गुरु रामानन्द बनाय, बात है भक्त धन्ना जाट की।।
चौदह सो पन्द्रह में जन्म लियो, बरस बीसा में चरणामृत पियो।
पांच साल को बाल भयो, पंडित पत्थर को सालिगराम दियो।
बाल मन पत्थर ने सालिगराम ही मान लियो।।
उठे तो बोले, बैठे तो बोले, जय जय सालिगराम।
नित कर्म रोज करे, रोज पत्थर को नहलावे,
तिलक माटी को करे, जद चंदन हाथ नही आवे।
पूजा पाठ नित दिन करे, भक्ति सूं भर हिवड़े स्यू लगावे।।
बाजरे की रोटी बनी जद, सालिगराम ने खिलावे।
कभी बन्द करे, अंखिया कभी खोल दिखावे।।
भगवान रोटी नहीं खावे, तो भक्त धन्ना भी भूखा ही रात बीतावे।
धीरे धीरे घणा दिन बीत गया, तो सालिगराम खुद आकर भोजन कर जावे।।
कुछ दिन यूं ही बीत्या, एक दिन पिता पुत्र से खेत जुतावे।
खेता जाता बीच कुछ संत मिल्या, अर धन्ना बीच को भोजन बंटावे।।
खेत हलणे ने हाळी चाल्यो, बीना बीज के खेत बीजावे।
सुणी बातां अररे, संता के खेता में फसले जोर की लहरावे।।
मनड़ो नहीं मान्यो, जद भक्त एक बार खेत देखने आवे।
प्रभु की लीला, ठाकुर सालिगराम है सबकुछ कर्ता अर धन्नो बार बार शीष झुकावे।।
छोरो जाट को सबकुछ अर्पण कर, भक्त धन्नाजी कहलावे।
भई कृपा सालिगराम की तो जय हाथ जोड़ भक्ता की गाथा लिख पावे।।

**अगर भगवान ने बुरा वक्त नहीं बनाया होता तो, अपनों में छुपे हुए गैर,
और गैर में छुपे हुए अपने, कभी नजर नही आते।**

आलेख

मेरा धनावंश

• मनोहरलाल स्वामी
दौलतपुरा

मैं धनावंशी संप्रदाय में जन्मा, लेकिन 22 साल तक मुझे यह पता नहीं चला कि मेरा संप्रदाय कौनसा है? यह स्थिति केवल मेरे साथ ही घटित हुई–ऐसी बात नहीं है। मेरे जैसे हजारों युवक–युवतियों को अपने पंथ धनावंश के सम्बन्ध में किसी प्रकार का कुछ मालूम नहीं है। मेरे इस संप्रदाय का इतिहास क्या है? इसे किसने प्रारंभ किया? कब किया? क्यों किया? प्रारंभ होने के बाद क्या हुआ?

सन 2006 की एक घटना ने मुझे तोड़ कर रख दिया। घटना यह थी कि मेरे एक साथी राजेश कुमार स्वामी झुंझुनू ने मुझसे कहा कि भाई मेरे भांजी है उसके लिए अच्छा लड़का देखना है। तब मैंने मेरे ही रिश्तेदारी में दो लड़के सुझाए– एक राजस्थान पुलिस में और दूसरा सीआरपीएफ में था। दोनों के परिवार वहां जाकर मिले, लेकिन मिलने के बाद पता चला कि लड़कीवाले अलग स्वामी हैं और हम अलग स्वामी। आलम यह हुआ कि मेरे साथी राजेश स्वामी ने यूनिट में बोला आप तो नीचेवाले स्वामी हो, कलटूट हो। मुझे नहीं मालूम था कि मैं कौनसा स्वामी हूं,पर अनजाने में मैंने भी उससे वाक युद्ध कर लिया और उसी की भाषा में उसको जवाब दे डाला। लेकिन मन को शांति नहीं मिली। 2006 से लेकर 2018 तक लगभग 12 साल के समय के दौरान बहुत लोगों से पूछने और जानकारी लेने पर इतना तो पता चला कि हमारा परिवार धनावंशी है, पर यह किसी ने नहीं बताया कि धनावंशी होता क्या है? हमारे धनावंशी बंधुओं से कोई संतुष्टिपरक जवाब नहीं मिला। हां केवल इतना ज्ञान जरूर हुआ कि हम धनावंशी हैं। जैसे पीपावंशी, रांकावत, रामावत, निमावत स्वामी होते हैं, वैसे ही हम होते हैं। पर अफसोस इस बात का होने लगा कि ये दूसरे स्वामियों का तो पूरा– पूरा इतिहास मिलता है, पर हमारा तो किसी को

कुछ पता ही नहीं है। शुक्र है, जोधपुर के हमारे धनावंशी बंधु कौशलजी ने मुझे गुरुदेव चेतनजी के बारे में बताया और तब तक मैं भी अच्छी तरह से जान चुका था कि हमारी उत्पत्ति जो भी रही हो लेकिन हमारे स्वामी बनने का कारण रामानंदजी के शिष्य गुरुदेव धनाजी हैं। चेतनजी ने बहुत स्पष्ट करके समझाया कि हम धनाजी के अनुयायी होकर ही धनावंशी वैरागी हैं। यह बात मुझे हर तरह से उचित और प्रमाण सहित लगी। मेरे मन को संतुष्टि मिली। अपनी पहचान पाना बड़ी सुख की बात

आत्मविश्वास में पैदल चलना, संदेह में दौड़ने से कहीं बेहतर है।

समाज में यदि कोई पूछता है कि कौन से स्वामी हो तो उत्तर मिलता है-- श्री श्री 1008 श्री वैष्णव। इसी प्रकार न जाने कितने ही कल्पित नाम दे देते हैं। सच्चाई से मुंह मोड़ लेते हैं। इसलिए इस समाज के प्रत्येक नौजवान को आगे आना होगा और जो समाज के अंदर हमारे इतिहास को नहीं जानते हैं उनको सच्चाई की ओर ले जाना है।

होती है।

विडंबना की बात यह है कि आज भी समाज की 50% जनसंख्या को खुद के अस्तित्व का पता नहीं है। पता नहीं है कि हम क्या हैं? हम स्वामी हैं तो कौन से स्वामी हैं? 25 प्रतिशत धनावंशी अपने आपको धनावंशी तो मानते हैं, पर क्यों मानते हैं, यह उन्हें पता नहीं है। जिस अंधकार में हमारे दादाजी हमारे पिताजी और हम रहे हैं उस अंधकार में हमारे बच्चे ना रहे, यह बहुत जरूरी है। अपने कुल का बोध होना जरूरी है। समाज को अब इस सम्बन्ध में जागरूक करना जरूरी है।

धनावंशी संप्रदाय में सुधार के मुख्य बिंदु

एक मंच : एक मंच का अर्थ है कि हम सभी जितने भी धनावंशी हैं चाहे किसी भी गांव या शहर में रहते हैं, अपने वंश के लिए, अपने इतिहास के लिए आगे आएं और बढ़-चढ़कर कर काम करें। समाज के अंदर चल रही मिथ्या बातों को खत्म करें। समाज में यदि कोई पूछता है कि कौन से स्वामी हो तो उत्तर मिलता है-- श्री श्री 1008 श्री वैष्णव। इसी प्रकार न जाने कितने ही कल्पित नाम दे देते हैं। सच्चाई से मुंह मोड़ लेते हैं। इसलिए इस समाज के प्रत्येक नौजवान को आगे आना होगा और जो समाज के अंदर हमारे इतिहास को नहीं जानते हैं उनको सच्चाई की ओर ले जाना है। थोड़ा सा मैं बताना चाहता हूं। हमारा समाज कोई जाति नहीं था। एक संप्रदाय था। वैष्णव संप्रदाय। रामानंदाचार्य के सभी शिष्यों ने अपने संप्रदाय प्रारंभ किए। कबीर का कबीर पंथ, रैदास का रैदासी, पीपा का पीपावंश। ऐसे ही धनाजी का धनावंश। प्रत्येक शिष्य ने अपने अनुयायी बनाए, उन्होंने हर जाति से शिष्य बनाए किंतु एक धनाजी ने अपनी जाति के लोगों को ही भगवान के प्रति आकर्षित किया। और धनाजी की बात मान कर के जो लोग भगवान की भक्ति करने लगे, मंदिर की पूजा करने लगे, खेती-बाड़ी तो पहले से करते ही थे। धनाजी को गुरु मानने लगे। आज भी कुछ लोग अज्ञानतावश इस सच्चाई से मुंह मोड़ते हैं। हमें किसी से बैर नहीं करना लेकिन उन्हें इस सच्चाई का बोध जरूर करवाना है।

दहेज एक कुप्रथा : यह कुप्रथा है जो कि हमारे समाज को बुरी तरह से जकड़े हुए है, इसलिए मैं यह तो नहीं कहूंगा कोई दहेज लेना या देना बंद करे लेकिन मैं प्रण करता हूं कि मेरे पुत्र के विवाह में दहेज नहीं लूंगा। इसी प्रकार हर नौजवान यह प्रण करे तो किसी को कहने की जरूरत नहीं है।अपने आप लड़के वाले दहेज लेना बंद कर देंगे तब लड़कीवाले दहेज किसको देंगे? जब लड़केवाले मना कर देंगे तो यह कुप्रथा अपने आप बंद हो जाएगी।

मृत्यु भोज :मृत्यु भोज एक सामाजिक बुराई है। इसमें मैंने देखा है,एक बाप गरीबी में मर जाता है और उसका बेटा 5 से 10 साल का मुश्किल से होगा। पढ़ाई के खर्चे की तो छोड़ो, रोटी के लाले हैं, और गांव के बड़े-बड़े साहूकार मिलकर मृत्यु भोज कराने के लिए दबाव डालते हैं। पैसे भी देते हैं और बाद में जब पैसा नहीं उतरता है, तब कर्ज को चुकाने के लिए उसको जमीन बेच देनी पड़ती है। जो जमीन उम्र भर पेट भरने के लिए थी, उस जमीन को वही साहूकार ले लेता है, जो उससे दबाव दिला करके मृत्यु भोज करवाता है। इसलिए किसी को मृत्यु भोज के लिए मैं मना नहीं करूंगा लेकिन साथ ही मैं इस सामाजिक बुराई में अकेला लड़ूंगा और मेरी यह लड़ाई अपने आप से शुरू होगी कि मैं ऐसे मृत्यु भोज में जाऊंगा नहीं और यदि कहीं नातेदारी में जाना ही पड़ गया तो बिना मृत्यु भोज किए हुए ही वापस आऊंगा। साथ ही मैं प्रण करता हूं कि मेरे घर में कभी मृत्यु भोज नहीं करूंगा। हां, हिंदू रीति

आपको श्रेय मिले न मिले, पर अपना श्रेष्ठ देना कभी भी बन्द ना करें।

रिवाज करना अलग बात है। लेकिन आसपास के गांव का भोज और रिश्तेदारों को बड़ी संख्या में आमंत्रित करना गलत है। इसलिए ना तो मैं ऐसा भोज करूंगा न ही किसी भोज में जाऊंगा। मैं किसी भी समाज बंधु को मना नहीं करूंगा जो बंधु अपने आप से शुरुआत करें तो एक अच्छी पहल होगी।

शिक्षा का स्तर : शिक्षा हर समाज का वह पहलू है जिससे उसकी पहचान बनती है। लेकिन आज के जमाने में विशेषकर हमारे स्वामी समाज में ऐसी परंपरा हो गई कि लड़के दसवीं पास भी नहीं कर पा रहे हैं। जो ग्रेजुएशन कर भी लेते हैं तो उनके पास जीवन का कोई ठोस प्लान नहीं है। एक जमाना था जब हम पढते थे, तब स्कूल में हमारे साथ 30 लड़कों में एक लड़की पढती थी। लड़कियों को पढाते नहीं थे। आज पढाई में लड़कियां आगे हैं। लड़के पढ़ाई के प्रति गंभीर नहीं हैं। नहीं है तो उन्हें बाहर भेज दिया जाता है या फिर वे दसवीं बारहवीं करके बैठ जाते हैं। चाहे लड़का हो या लड़की समाज के बच्चों के लिए ऐसी संस्थाएं बने जो कि उन्हें जॉब के लिए तैयार करे। नो लोस नो प्रॉफिट पर वह संस्था काम करे। हमारे रिटायर्ड आर्मीमैन फिजीकली तैयारी कराएं और एजुकेशन क्षेत्र से रिटायर्ड लोग पढ़ाई की तैयारी कराए। इस तरह हम बहुत अच्छी एजुकेशन का स्तर बढ़ा सकते हैं। और हमारे समाज के बच्चों का भविष्य संवार सकते हैं।

युवाओं के लिए संदेश : सभी धनावंशी युवाओं के लिए एक संदेश देना चाहता हूं कि आप इस क्षेत्र में आगे आएं और आपने देखा है पढा है वैष्णव संप्रदाय के अनुसार अपने समाज का उद्धार करें और उसके लिए अपने आप से वादा करें कि प्रत्येक वह बुराई जो समाज में चली आ रही से अपने आप को दूर रखूंगा। और कोशिश करूंगा कि समाज में ऐसी बुराइयां ना हो।

झूठी शान : हमारे समाज के अंदर हमने देखा है कि हमारे पूर्वज प्याज और लहसुन भी नहीं खाते थे, लेकिन विडंबना है कि हमारे समाज में अनेक बुराईयां घर करने लगी है। वैष्णव वही होता है जो नशे पते से दूर रहे। गलत खान पान तथा किसी के साथ गलत व्यवहार न हो।बड़ों का आदर करो। हमारी सभ्यता संस्कृति को हम भूलते जा रहे हैं। उस संस्कृति को हमें बचाना है। उसके लिए हमें कृत संकल्प होना पड़ेगा।

संकल्प : किसी बात को दूसरों के द्वारा ना करने की सलाह देने के बजाय अपने आप में संकल्प लो कि मेरे समाज, मेरे परिवार, मेरे देश, मेरे गांव, के विकास के कार्यों में मैं बढ़–चढ़कर भाग लूंगा। जहां मुझे लगेगा यह गलत है, उस कार्य के पास बैठना भी पसंद नहीं करूंगा। यह अपने आप में संकल्प होना चाहिए।

●●●●●

मुझे दुख इस बात का नहीं है कि मेरे पंथ के लगभग महंत द्वारे खत्म हो गए।
मुझे इस बात का भी दुःख नहीं है कि अधिक संख्या में लोगों को मेरी बातें रुचती नहीं।
मुझे इस बात का दुख भी नहीं कि मेरे समाज में इसके उत्थान के लिए प्रयत्नशील नहीं हो रहे हैं।
मुझे तो इस बात का दुख है कि जो समाज की वस्तु स्थिति को भली प्रकार से जानते हैं –फिर भी अकसर वे खामोश बने रहते हैं।

●●●●●

लोगों से डरना छोड़ दो, इज्जत ऊपरवाला देता है लोग नहीं ।

आलेख

श्री धनावंशी स्वामी समाज राजस्थान जोधपुर

यथार्थ में श्री धनाजी महाराज के प्रति अधिकाधिक श्रद्धा रखनी चाहिए। प्रत्येक समाजजनों को अधिक से अधिक सकारात्मकता एवं सहयोग रखते हुए धनावंशी समाज की उनति की गतिशीलता अधिकाधिक रखी जानी चाहिए।

● जयनारायण स्वामी
उपनिदेशक कृषि

धनावंश समाज के प्रबुद्धजनों के साथ श्री लक्ष्मीनारायण (से.नि. पुलिस उप-अधीक्षक) धनावंशी स्वामी ने समाज के गठन के लिए वर्ष 1973-74 से प्रयास किए। श्री धनावंशी स्वामी समाज राजस्थान जोधपुर नाम की संस्था का गठन वर्ष 1975 में महन्त श्री बद्रीदास गोलिया की अध्यक्षता में हुआ। संस्था का पंजीयन क्रमांक 169 सन् 1976-77 उपपंजीयक सहकारिता विभाग, जोधपुर में हुआ, जिसका कार्यक्षेत्र पूरा राजस्थान है। पंजीयन के समय संयोजक श्री लक्ष्मीनारायण (से.नि. पुलिस-अधीक्षक), अध्यक्ष महन्त श्री बद्रीदास गोलिया, उपाध्यक्ष श्री रतनदास निम्बीजोधा, मंत्री महन्त श्री प्रेमदास जायल, सचिव श्री गटमदास गजसिंहपुरा, कोषाध्यक्ष श्री देवाराम स्वामी बाकलिया, संयुक्त सचिव श्री ईश्वरदास दुजार तथा कार्यकर्ता श्री मानदास जिनरासर बताये गये थे। लम्बे समय तक महन्त बद्रीदासजी गोलिया द्वारा मन्दिर गोवर्धननाथ सिटी पुलिस जोधपुर में बैठकों का आयोजन करते रहे। समय अनुसार गहन चिन्तन पश्चात् समाज के अन्तर्गत छात्रावास भवन निर्माण हेतु अलग संस्था के गठन का निश्चय हुआ।

श्री लक्ष्मीनारायण (से.नि. पुलिस उप-अधीक्षक) संयोजक द्वारा डॉ. के. डी. स्वामी (पूर्व कुलपति, विश्वविद्यालय, भरतपुर) की अध्यक्षता में कार्यकारिणी का गठन हुआ, जिसमें श्री चतुर्भुज वैष्णव (पूर्व अध्यापक), श्री प्रेमदास वैष्णव (पूर्व अध्यापक), श्री परमानन्द सहारण, जेठूदासजी वैष्णव, सोहनदासजी वैष्णव, श्री रामदास (यूको बैंक), श्री जयनारायण स्वामी (उपनिदेशक कृषि), श्री भागूलाल वैष्णव इत्यादि सक्रिय सदस्य थे।

पंजीकरण क्रमांक 39/जोधुपर/1995-96 है। वर्तमान में रामेश्वर नगर में दो पट्टासुदा भूखण्डों पर छात्रावास का निर्माण हुआ है। डॉ. के.डी. स्वामी एवं श्री लक्ष्मीनारायणजी के नृतत्व में सभी समाज बंधुओं का योगदान रहा। लेकिन कुछ समाज के प्रबुद्धजनों का स्मरण यहां पर समीचीन है। स्व. तुलसीदाजी पूनिया पाल, स्व. मोहनदासजी गाजू, स्व. लालदासजी फागणिया झींपासनी सभी का योगदान अविस्मरणीय रहेगा। छात्रावास निर्माण में भी मैं शुरु से अन्त तक जुड़ा रहा एवं हर सम्भव सहयोग दिया। चूंकि शिक्षा का कार्य था। राजकीय अवकाश लेकर चन्दा एवं छात्रावास/शिक्षा बाबत अधिकांश क्षेत्रों में समाज के प्रबुद्धजनों का दर्शन लाभ हुआ तथा जीवन यात्रा में अतुलनीय अनुभव प्राप्त हुआ।

एक बार डॉ. के. डी. स्वामी के साथ झुमियावाली अबोहर पंजाब गए। तब सभी समाज बंधुओं को धनावंशी शब्द की महता बताई, क्योंकि वहां विभिन्न बैरागी वैष्णव का चलन है। लेकिन धनावंशी शब्द से धनाजी महाराज की प्रेरणा मिलती है तथा सभी नवीन ऊर्जा से ओतप्रोत हुए। वहां के सरपंच श्री ओमप्रकाशजी

सत्य परेशान हो सकता है, लेकिन पराजित कभी भी नहीं होगा।

सिहाग के नेतृत्व में गांव वालों से लाखों रूपये चन्दा दिया, जिससे छात्रावास निर्माण को गति मिल सकी। वापसी के समय बरसात एवं भयंकर गर्मी थी।

समाज की उन्नति हेतु दूसरा आवश्यक कदम श्री धनाजी महाराज की जयन्ती उत्सव मनाना था, जो कि छात्रावास भवन में निरन्तर मनाया जा रहा है। एक बार डॉ. के. डी. स्वामी एवं मेरे द्वारा जोधपुर मुख्यालय के प्रत्येक घर निमन्त्रण देकर आए तथा प्रत्येक से टोकन राशि सहयोग लिया। छात्रावास में भोज का आयोजन किया तथा सभी समाज बंधुओं द्वारा महिलाओं सहित भाग लिया गया, जो कि आज दिवास्वप्न सा बन गया है। धनाजी महाराज की जयन्ती जोधपुर में नियमित रूप में मनाई जाती रही है। इन वर्षों में छात्रावास भवन में मनाई जाती है। पूर्व में महन्त श्री बद्रीदास गोलिया के निवास स्थान/मन्दिर श्री गोवर्धननाथजी सिटी पुलिस में मनायी जाती थी। महन्तजी द्वारा बालक धनाजी की फोटो हमेश के लिए छात्रावास में रखवा दी है। इस वर्ष भी जयन्ती दिनांक 5 फरवरी 2021 को धमूधाम से मनाई जायेगी, क्योंकि अब तो डॉ. चेतन स्वामीजी द्वारा स्तुति एवं धनाजी की आरती भी उपलब्ध करवा दी है।

वर्तमान में हमें डॉ. चेतन स्वामी श्रीडूंगरगढ़ को सामाजिक नेतृत्व के लिए सम्बलता देनी चाहिए तथा यथार्थ में श्री धनाजी महाराज के प्रति अधिकाधिक श्रद्धा रखनी चाहिए। प्रत्येक समाजजनों को अधिक से अधिक सकारात्मकता एवं सहयोग रखते हुए धनावंशी समाज की उनति की गतिशीलता अधिकाधिक रखी जानी चाहिए।

पुनश्च जोधपुर समाज संगठन की वजह से ही मंगलपुरा (लाडनूं) समाज भवन को असामाजिक तत्वों से न्यायिक प्रकरण में समाज के पक्ष में फैसला हुआ। नागौर छात्रावास भूमि आवण्टन के समय भी समाज का लैटरहेड काम आया। महन्त श्री बद्रीदासजी की वजह से समाज की अन्य पिछड़ा वर्ग में साद, स्वामी, बैरागी वर्ग में शामिल हुए।

इस कड़ी में धनावंशी स्वामी युवा विकास संस्था, जोधपुर के नाम का भी पंजीकरण वर्ष 2005-06 में करवाया गया, जिसका रजि. नं. 39 व वर्ष 2005-06 है अर्थात् समाज में जागृति का संचरण हो रहा है।

जोधपुर धनावंशी समाज द्वारा नियमिति बैठकें की जाती थी। एक फार्म का सृजन किया, जिस पर घर के सभी सदस्यों का विवरण लिया जाता था। वर्ष 2010 में श्री चतुर्भुज वैष्णव तथा श्री कौशल कुमार सहारण द्वारा पूर्ण संकलित दूरभाष निर्देशिका का प्रकाशन किया गया, जिसमें सभी उपलब्ध दूरभाष शामिल किए गए तथा समाज की अन्य जानकारियां दी गई। हालांकि समय के साथ इसका पुन: संशोधित प्रकाशन आवश्यकता महसूस की जा रही है, जिसकी कार्यवाही श्री कौशलकुमार सहारण तथा श्री चतुर्भुज वैष्णव से से.नि. अध्यापक द्वारा की जा रही है।

ऐसे ही सन् 1996 में मेरे पिताश्री रूपदास स्वामी (ढाका) सुजानगढ़ जोधपुर आए तब समाज बंधुओं द्वारा योगदान बाबत कहा तो उन्होंने कमरा निर्माण की सहमति दी, क्योंकि छात्रावास कार्यकारिणी सदस्य अधिकतम सहयोग की अपेक्षा रखते हैं।

भविष्य की योजना-वर्तमान में समाज अध्यक्ष द्वारा नवीन योजना क्रियान्वित नहीं हो पा रही है। छात्रावास अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायणजी का स्वर्गवास दिनांक 6 जुलाई 2020 में हो गया। आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि समाज हित के कार्य अवश्य होते रहेंगे। कोरोना भी नवीन योजना में बाधक रही है। कोरोना महामारी के पश्चात पूर्व की तरह समाजोपयोगी कार्यों को गति मिलेगी एवं नई पीढ़ी पूर्णरूपेण शामिल होगी, क्योंकि समाज का भविष्य युवा ही है। धनाजी महाराज के जन्म स्थान धुँआकला में भी समाज की उपस्थिति हेतु सत्संग हॉल निर्माण बाबत श्री भरतकुमार रलिया (प्रधानाध्यापक) युवा एडवोकेट श्री युधिष्ठर स्वामी, स्टाम्प वैंडर श्री प्रेमदासजी खिवताना आदि द्वारा चर्चा जोरों पर है। नीतिगत रूप में मैं भी सहमत हूँ।

जिन्हें अपने अंदर कोई गलती नजर नहीं आती,
उन्हें दूसरों में गलतियों के अलावा कुछ नजर नहीं आता।

आयुर्वेद के देवता भगवान धन्वन्तरि

ायुर्वेद प्राणियों के तन एवं मन के स्वास्थ्य का अद्भुत विज्ञान है। भारतीय विद्याओं में आयुर्वेद अत्यधिक लोकप्रिय है। आज तो सम्पूर्ण विश्व इसके प्रति आकर्षित हो रहा है। सर्वप्रथम अथर्ववेद में आयुर्वेद का वर्णन मिलता है और इसके आदि देवता भगवान धन्वन्तरि माने जाते है। भगवान धन्वन्तरि को विष्णु के चौबीस अवतारों में मान्यता प्राप्त है। भारतवर्ष के आस्तिक जन वैदिक काल से ही भगवान धन्वन्तरि की पूजा–उपासना करते आये है। यह विश्वास किया जाता है कि भगवान धन्वन्तरि की पूजा उपासना से शरीर रोगों से सुरक्षित रहता है। इनके जन्म दिवस को स्वास्थ्य दिवस के रूप में जाना जाता है।

भगवान धन्वन्तरि का प्राकट्य समुद्र मंथन के समय हुआ था ऐसी प्राचीन मान्यता है। जब समुद्र मंथन हुआ तो उसमें से चौदह दिव्य वस्तुएं प्रकट हुई थी जिन्हें चौदह रत्न भी कहा जाता है। ये वस्तुएं प्रकट होना भी प्रकृति की एक अद्भुत लीला है। समुद्र मंथन का वर्णन कई पुराणों एवं महाभारत में भी मिलता है। सबसे पहले ऐरावत हाथी, उच्चेश्रवा: घोड़ा, अप्सरायें, कौस्तुभ मणि, वारुणि महाशंख, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, लक्ष्मी और कदली वृक्ष प्रकट हुए। अन्त में भगवान धन्वन्तरि प्रकट हुए। अमृत वितरण के उपरान्त देवराज इन्द्र की प्रार्थना पर आपने देव वैद्य का पद स्वीकार किया।

जब पृथ्वी पर मनुष्यों के रोगों को दूर करने के लिए भगवान धन्वन्तरि ने विश्वमित्र के पुत्र सुश्रुत को आयुर्वेद का ज्ञान प्रदान किया, जिससे पृथ्वी लोक में आयुर्वेद का प्रचार–प्रसार हुआ। 'धन्वन्तरी संहिता' को आयुर्वेद का मूल ग्रंथ माना जाता है। आचार्य सुश्रुत ने जो ग्रंथ लिखा उसका नाम सुश्रुत संहिता है। इसमें शल्य चिकित्सा की प्रधानता है। भगवान धन्वन्तरि ने ही सुश्रुत को आयुर्वेद का ज्ञान दिया था इसका सबसे बड़ा प्रमाण और अन्त: साक्ष्य सुश्रुत संहिता में ही मिलता है। इसके प्रत्येक अध्याय के आदि में यथाह भगवान धन्वन्तरि (जैसा भगवान धन्वन्तरि ने कहा है।) यह वाक्य लिखा मिलता है। इससे यह सिद्ध होता है कि पृथ्वी लोक में आयुर्वेद का जन्म भगवान धन्वन्तरि से ही हुआ।

भगवान धन्वन्तरि का प्राकट्य समुद्र मंथन के समय धन त्रयोदशी (धनतेरस) को हुआ था। यह तिथि आयुर्वेद प्रेमियों और वैद्यों में भगवान धन्वन्तरि के जन्म दिवस के रूप में मनाई जाती है। भगवान धन्वन्तरि के शरीर का रंग सांवला है और इनके चार भुजायें है। चारों भुजाओं में क्रमश: शंख चक्र औषधिया जलका जोक, आयुर्वेद में जोंक भी एक औषधि है तथा अमृत कलश धारण किये हुए हैं। आपका रूप अत्यंत आकर्षक एवं सौम्य है। आपका आसन कमल पुष्प हैं। आपका ध्यान अत्यंत आनंददायक है।

भगवान धन्वन्तरि की प्रिय धातु पीतल है। अत: धनतेरस को पीतल खरीदनी चाहिए। धनतेरस भगवान धन्वन्तरि की पूजा आराधना पूरे विश्व में जहां

सुन्दरता आँखों को लुभाती है, मगर सरलता आँखों में बस जाती है।

भी आयुर्वेद प्रेमी और वैद्य है, की जाती है। वैदिक काल में जो प्रतिष्ठा और महिमा अश्विनी कुमारों की थी, वही प्रतिष्ठा पौराणिक काल में भगवान धन्वन्तरि को प्राप्त हुई। ये देवता रूप में और दिवोदास राजा के अवतार रूप में दोनों रूपों में रोगों से रक्षा करते हैं। ब्रह्मवैवर्त पुराण में धन्वन्तरी और नाममाता मनसादेवी का संवाद भी प्राप्त होता है जिसमें विषों के कुप्रभाव से बचाव का वर्णन है।

भगवान धन्वन्तरि के ध्यान

ॐ शंक चक्रं जलौकां दधदमृतघटं चारुदोभिश्चर्तुभि:
सूक्ष्म स्वच्छतिहद्याशुंकपरिविलसन्मौलिमम्भोजनेत्रम्।
कालाम्भोदोज्ज्वलागं कटितविल सच्चारु
पीताम्बराढ्यम।
वन्दे धन्वन्तरि तं निखिल
गदवनप्रौढ़दावाग्निलीलम्।।

मूलमंत्र–धं धन्वन्तरयेनम:।

माला मंत्र–ॐ नमो भगवते महासुदर्शनाय वासुदेवाय धन्वन्तरये अमृत कलश हस्ताय सर्वभय विनाशयाय सर्वरोग निवारणा त्रिलोक पथाय त्रिलोक नाथाय श्री महाविष्णु स्वरुपाय श्री धन्वन्तर्ता रुपाय श्री श्री श्री श्री औषधि चक्राय नारायणाय नम:।

◆◆◆

दो वैष्णव परंपराएं

राम वाटिका

राम मंदिरों में वाटिका लगाने की परंपरा बहुत प्राचीन रही है। इन्हें वाटिका, कुंज, निकुंज आदि नाम दिए जाते थे। ये वाटिकाएं वैष्णव साधुओं ने अपने हाथों से स्थापित कीं। वृंदावन, गलता, रैवासा, अयोध्या आदि सभी बड़े वैष्णव स्थानों पर इन वाटिकाओं को देखा जा सकता है। वस्तुतः वैष्णव यह मानते रहे हैं कि ये वाटिकाएं श्रीसीतारामजी का विहार स्थल होतीं हैं, और सीतारामजी सूक्ष्म रूप से इन में विहार करते हैं।

मेले

वैष्णव वैरागियों की दूसरी परंपरा धार्मिक मेले लगाने की रही है। कुंभ– अर्ध कुंभ आदि मेले उसी परंपरा में लगाए जाते हैं। अयोध्या में वैष्णवों के मेले लगते थे। सभी वैरागी संप्रदाय अपने यहां पर मेले लगाने की परंपरा को जीवंत किए हुए हैं। 25 के लगभग जो वैरागी संप्रदाय हैं, उनमें एकमात्र धनावंश ही ऐसा है, जो अपने संप्रदाय का मेला नहीं लगाता। क्यों नहीं लगाता, यह आप मेरे से बेहतर जानते हैं।

●●●

बोलना और प्रतिक्रिया करना जरूरी है, लेकिन संयम और सभ्यता का दामन नहीं छूटना चाहिए।

आलेख

वै. धनावंशी स्वामी समाज सम्भागीय समिति, बीकानेर

● मांगीलाल स्वामी

जब–जब भी विवाह आदि समारोह में समाज के लोग मिलते तो चर्चा चलती है कि सभी समाजों में भवन बने हुए है परन्तु धनावंशी समाज का भवन बीकानेर शहर में नहीं है। सभी को यह बात खलने लगी। इसके अलावा बीकानेर शहर में मेडिकल कॉलेज, इंजिनियरिंग, पोलीटेक्नीकल कृषि कॉलेज है जिसमें समाज के दूर–दराज से विद्यार्थी एवं समाज के लोगों का आवागमन रहता है और उनके रहने के लिए बड़ी कठिनाई होती है क्योंकि आर्थिक दृष्टि से सभी लोग सम्पन्न नहीं है। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए व समाज में जागृति लाने हेतु एक मीटिंग हुई तथा जिला स्तरीय चर्चा समिति का गठन हुआ जिसके फलस्वरुप शीघ्र ही भवन के लिए जमीन क्रय की गई। फिर सम्भागीय स्तर पर समिति गठन के लिए एकत्रित हुए जिसमें श्री लक्ष्मीनारायणजी, प्रो. के. डी. शर्मा जोधपुर तथा बाकलिया गांव श्री देवारामजी प्रेरणा स्रोत रहे। समाज की पहचान प्रगति, शैक्षिक उन्नयन व आध्यात्मिक उन्नयन हेतु वै. धनावंशी स्वामी समाज समिति का गठन हो गया। उस समिति में 30 संरक्षक सदस्य तथा 100 आजीवन सदस्य बने उनकी संख्या उतरोत्तर वृद्धि हो रही है। समय समय पर आमसभा में दानदाताओं एवं अच्छे अंक लाने वाले छात्रों को सम्मानित किया जाता रहा है और भवन का उपयोग अधिकत्तर विद्यार्थियों तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु आये छात्रों के लिए किया जाता रहा है। समिति का संविधान है ।

परम्पराओं और कुप्रथाओं में बहुत बारिक फर्क होता है।

ऑडिट रिपॉर्ट प्रतिवर्ष संघारित की जाती है। बिजली, पानी, अखबार आदि सुविधाएं उपलब्ध है। स्नेह मिलन का कार्यक्रम प्रथम 3–4 वर्ष तक चला।

धनावंशी स्वामी समाज हित के लिए सर्वप्रथम सन् 1999 में श्री सुदर्शनजी के घर बीकानेर, सींथल, सुजानगढ़, धीरदेसर, श्री डूंगरगढ़ के गणमान्य लोग अपने समाज का भवन एवं जिला समिति गठनार्थ एक मीटिंग हुई। तत्पश्चात श्री जुगलाल मेहला के घर पर भी मीटिंग हुई तथा एक जिला स्तरीय तदर्थ समिति का गठन हुआ। वैद्य रामेश्वर प्रसाद सींथल अध्यक्ष बने तथा भवन हेतु जमीन खतुरिया कॉलोनी में ली गई। 9.12.2000 को एक सिंधी धर्मशाला में एक मीटिंग श्री देवाराम बाकलिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें जोधपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, चूरू जिले के करीबन 100 व्यक्ति उपस्थित हुए तथा सम्भागीय स्तर पर समिति का गठन किया गया। 2 पट्टो की जमीन की रजि. भी हो गई। समिति में क्रमशः डूंगरमलजी, पूर्णमलजी, भगवानदासजी, गोपालदासजी अध्यक्ष रहे तथा वर्तमान में गोरधनदासजी है।

भवन निर्माण हेतु वैद्य श्री रामेश्वरप्रसाद सींथल, भगवानदासजी बीकानेर, हरिदासजी जैगणिया, बजरंगदासजी बीकानेर एवं ओमप्रकाशजी व नोपदासजी ने सभी जिलों के गांव गांव व ढाणी–ढाणी जाकर चन्दा इकट्ठा किया जिसके फलस्वरुप भवन के 12 कमरों का निर्माण हुआ। बाद में उपरी मंजिल का निर्माण किया गया। इनका सतत प्रयासों से कार्य पूर्ण हुआ। वर्तमान में 20 कमरें, ऑफिस, रसोई, वाशरूम है। 2 गेस्ट रूम है। अधिकतर कमरे एक–एक परिवार द्वारा निर्मित किये गये। जिनके शिलालेख लगाये हुए है। भवन बनाने का मुख्य उद्देश्य समाज के बाहर से आने वालों की ठहरने की व्यवस्था तथा परीक्षा तैयारी एवं अध्ययन हेतु विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था रही है। कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा जनगणना का कार्य भी तहसीलवार की गई परन्तु पत्रिका छपवाने का कार्य अधूरा रह गया। एक बड़ा हॉल भी है। पूर्व दिशा की ऊपरी मंजिल का निर्माण बकाया है। भवन में मंदिर बनाने का कार्य भी नहीं हुआ। एक कमरे में ही दिपावली आरती, हनुमान चालीसा बोला जाता है। सर्वप्रथम तो सांस्कृतिक खेलकूद प्रतियोगिता, स्नेह मिलन आदि कार्यक्रम होते रहे परन्तु बाद में बंद हो गये। कुछ वर्षों तक बिना किसी वार्डन के चलता रहा परन्तु अभी वार्डन नियुक्त है। अधिकतर इस भवन का उपयोग दूर–दराज से आने वाले विद्यार्थियों के लिए है। अंकवार एवं पत्रिका की सुविधा उपलब्ध है। समय समय पर विद्वान लोगों द्वारा भाषण, योग सम्बंधी शिविर भी लगाये जाते है। वर्तमान में कोविड–19 के कारण बंद है। फिर भी अग्रिम सूचना एवं निर्देशों के तहत रह सकते है।

इस स्वामी समाज भवन में ठहरने वालों से रख–रखाव के अलावा कोई शुल्क नहीं लिया जाता है। अनुशासन एवं स्वामी आचार संहिता का पालन करना आवश्यक है। 40 छात्रों के लिए व्यवस्था है। प्रतिवर्ष 2002 से लेकर 2019 व मार्च 2020 तक 34 से 40 छात्र रहते रहे है। कमरों के अभाव में बहुत से विद्यार्थियों को इस व्यवस्था से वंचित रहना पड़ता है। 2 कमरे अतिथियों के लिए 2 दिन तक उपलब्ध है। भोजन व्यवस्था निरंतर चलती रहती है। पानी, बिजली, फर्नीचर की पूर्ण व्यवस्था है। जुगलालजी व भगवानदासजी की देखरेख है। यह सूचना अनरिकॉर्डिड प्रस्तुत की जा रही है। अधिकतर नीट, आरएएस, नर्सिंग परीक्षा के लिए तथा अतिथि लोग भी आते रहते है।

●●●

लफ्ज ही होते हैं इंसान को पहचाने का असली आईना, शक्ल का क्या ?
वो तो उम्र और हालात के साथ बदल जाती है ।

आलेख

वैष्णव उपनिषद

भारतीय धर्म दर्शन के विकास का अनुशीलन हमें इसी सिद्धान्त पर पहुंचाता है कि उनके बीज उपनिषदों में संकेत रूप से निहित है। वैष्णव धर्म के मूल रूप के अध्ययन की सामग्री इन उपादेय उपनिषदों में ही बिखरी हुई है, परंतु कतिपय उपनिषद तो सर्वथा विष्णु तथा उनके विभिन्न अवतारों के रहस्यों के प्रतिपादन में ही व्यस्त दीख पड़ते हैं। इन्हीं उपनिषदों का संक्षिप्त परिचय कराना इस छोटे लेख का उद्देश्य है।

वैष्णव उपनिषद संख्या में चौदह हैं और इन सबका एक सम्पुट में प्रकाशन थियासोफिकल सोसायटी ने अड्यार (मद्रास) से किया है। अक्षर क्रम से इनका सामान्य निर्देश इस प्रकार है–

1. अव्यक्तोपनिषद–इस उपनिषद में सात खण्ड है। विषय है अव्यक्त पुरुष को व्यक्त रूप की प्राप्ति। इसमें अनुष्टुमी विद्या के स्वरूप तथा फल का पर्याप्त निर्णय किया गया है। इसी के बल पर परमेष्ठी को नृसिंह दर्शन होता है और वे जगत की सृष्टि में समर्थ तथा सफल होते है।

2. कलिसन्तरणोपनिषद–इस उपनिषद में नारदजी के प्रार्थना करने पर हिरण्यगर्भ ने कलि के प्रकश्चों को पार करने वाला उपाय बतलाया है। यह उपाय भगवान का षोडश नाम वाला मंत्र–

हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण हरे हरे।।

इस मंत्र का एक रहस्य है। जीव षोडश कलाओं से आवृत्त रहता है। इसलिए उसकी प्रत्येक कला को दूर करने के लिए सोहन नाम वाला मंत्र अतीव समर्थ बतलाया गया है।

इति षोडशकं नाम्नां कलिकल्मषनाशनम्।
नातः परतरोपायः सर्ववेदेषु दृश्यते।।
इति षोडकलावृतस्य जीवस्यावरणविनाशनम्।
ततः प्रकाशते परं ब्रह्म मेघापाये
रविरश्मिमण्डलीवेति।।

3. कृष्णोपनिषद–यह उपनिषद बहुत ही छोटा है। इसमें श्रीकृष्ण की भगवत्ता का परम प्रामाणित वर्णन किया गया है। भगवान श्रीकृष्ण ने भक्तों के ऊपर अनुग्रह

सभी शब्दों का अर्थ मिल सकता है,
परन्तु जीवन का अर्थ जीवन जी कर और संबंध का अर्थ संबंध निभाकर ही मिल सकता है।

करने के लिए ही समग्र बैकुण्ठ को ही अपने साथ इस भूतल पर अवतीर्ण किया था, इसका रोचक वर्णन यहां उपलब्ध होता है। श्रीकृष्ण के जीवन के आध्यात्मिक रूप जानने के लिए इस उपनिषद की महत्ती उपयोगिता है। श्रीकृष्ण तो स्वयं शाश्वत ब्रह्म ही हैं और उनकी सेविका गोपिकाएं तथा सोलह हजार एक सौ आठ रानियां उपनिषद की ऋचाएं ही हैं–

अष्टावष्टसहस्रे द्वे शताधिक्यः स्त्रियस्तथा।
ऋचोपनिषदस्ता वै ब्रह्मरूपा ऋचः स्त्रियः।।

4. गरुडोपनिषद-इस स्वल्पकाय उपनिषद में गारुडी विद्या के रहस्य का उद्घाटन है। गरुड के स्वरुप का आध्यात्मिक रीति से विवेचन इस ग्रन्थ की विशिष्टता है।

5. गोपालतापिनी उपनिषद- इस ग्रंथ के दो भाग हैं–(क) पूर्व, (ख) उत्तर। पूर्व तापिनी के छः अध्याय हैं जिनमें गोपाल कृष्ण अष्टादश अक्षर वाले मन्त्र के रूप, फल तथा जप विधान पूर्णतया विस्तृत वर्णन है। उत्तर तापिनी में अनेक आध्यात्मिक रहस्यों का वर्णन है। मथुरा के आध्यात्मिक रूप का निर्णय गोविन्द की बड़ी ही सुन्दर स्तुति उपलब्ध होती है–

नमो विज्ञानरूपांय परमानन्दरूपिणे।
कअष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः।।
श्रीकृष्ण रूक्मिणीकान्त गोपीजनमनोहर।
संसारसागरे मग्नं मामुद्धर जगद्गुरो।।

6. तारसारोपनिषद-इसमें तारक मंत्र के स्वरुप का निर्णय किया गया है। भगवान नारायण के अष्टाक्षर मंत्र का विस्तार के साथ उपदेशन कथन है।

7. त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषद-यह उपनिषद वैष्णव उपनिषदों में सबसे बड़ा है। महत्त्व तथा विस्तार दोनों की दृष्टि में इस उपनिषद को गौरव प्राप्त है। इसमें आठ अध्याय हैं। प्रथम अध्याय में परमेष्ठी ने भगवान नारायण से ब्रह्म स्वरूप की जिज्ञासा की और इसी जिज्ञासा की पूर्ति के लिए इस उपनिषद का उपदेश है। ब्रह्म के चार पाद बतलाये गये हैं– (क) अविद्यापाद, (ख) विद्यापाद, (ग) आनन्दपाद और (घ) तुर्यपाद। प्रथम पाद में अविद्या संसर्ग रहता है। अन्तिम पाद इससे नितान्त विशुद्ध रहते है। विद्या तथा आनन्दपाद में अनित तेजः प्रवाह के रूप में नित्य बैकुण्ठ विराजता है और यहीं तुरीय ब्रह्म अपने समग्र तेज तथा वैभव के साथ स्थित रहते हैं। अन्य अध्यायों में साकार तथा निराकार शब्दों की व्याख्या है। ब्रह्म स्वतः अपरिच्छिन्न है। अतः वह साकार होते हुए भी निराकार रहता है और इन दोनों से भी परे वर्तमान रहता है। महामाया का ही यह जगत विलास है और अन्त में यह जगत महाविष्णु में लीन हो जाता है। पञ्चम अध्याय में मोक्ष के उपाय का कथन है। मुक्ति तत्त्वज्ञान के लाभ से ही होती है और उस ज्ञान का परिपाक भक्ति तथा वैराग्य के कारण सम्पन्न होता है। षष्ठ अध्याय में ब्रह्माण्ड के स्वरूप का परिचय कराया गया है तथा विष्णु के विभिन्न रूपों की उपासना से भिन्न–भिन्न लोकों की प्राप्ति का निर्देश किया गया है। सप्तम अध्याय में नारायण के यन्त्र का वर्णन है। अन्तिम अध्याय में आदि नारायण ही गुरु रूप से निर्दिष्ट किये गये हैं जिनकी एकमात्र निष्ठा करने से ही प्रपञ्च का उपशम होता है। इस उपनिषद के मूल सिद्धान्त पुरुषसूक्त उल्लिखित है। रामानुजदर्शन तथा अन्य वैष्णव दर्शनों पर इस उपनिषद का प्रचुर प्रभाव पड़ा है। रामानुज के अनुसार अचित तत्त्व के तीन प्रकारों में प्रथम भेद है–शुद्धसत्व और यही शुद्धसत्व त्रिपाद्विभूति, परमपद, परमव्योम, अयोध्या आदि शब्दों के द्वारा व्यवहृत होता है

8. दत्तात्रेधयोपनिषद-इसमें दत्तात्रेय की उपासना का वर्णन है तथा तत्सम्बद्ध नाना मंत्रों के वर्णन तथा विधान का कथन है। दत्तात्रेय के मंत्र के बीज की भी विशिष्ट व्याख्या है। उपनिषद छोटा ही है।

9. नारायणोपनिषद-यह उपनिषद परिमाण में बहुत छोटा है। इसमें चार खण्ड है जिनमें नारायण के अष्टाक्षर मंत्र का उद्धार तथा महात्म्य प्रतिपादित किया गया है।

10. नृसिंहतापिनी उपनिषद-इस उपनिषद के दो खण्ड हैं– पूर्व और उत्तर। इसमें नृसिंह के रूप तथा मंत्र का विस्तृत वर्णन है। नृसिंह की तांत्रिकी पूजा का रहस्य इसमें विस्तार से उद्घाटित किया है। इस प्रकार

जिंदगी विज्ञान की तरह होती है, जितने प्रयोग करेंगे, फल उतना ही बेहतर मिलेगा।

तांत्रिक उपनिषदों में यह उपनिषद महत्त्वपूर्ण तथा महनीय है। इसके ऊपर शंकराचार्य की भी टीका मिलती है, जिसे अनेक आलोचक आद्य शंकराचार्य की रचना मानने में संकोच करते हैं। नृसिंह के महाचक्र का वर्णन पूर्वतापिनी के पञ्चम उपनिषद में विस्तार के साथ किया गया है। उत्तरतापिनी में नव खण्ड हैं जिनमें निर्विशेष ब्रह्म के स्वरूप का प्रामाणिक विवेचन है। अष्टम खण्ड तुर्य ब्रह्म की महनीयता तथा व्यापकता के वर्णन में समाप्त हुआ है। नवम खण्ड में जीवन तथा माया के साथ ब्रह्म के सम्बन्ध का प्रतिपादन है। इस प्रकार यह ग्रन्थ अद्वैत तत्तव के सिद्धान्तों की जानकारी के लिए नितान्त प्रौढ़ तथा उपादेय है।

11. रामतापिनी उपनिषद-इसके भी दो खण्ड हैं जिनमें राम की तांत्रिक उपासना का विस्तृत विवेचन उपलब्ध होता है। राम तथा सीता के मंत्र का मंत्र के क्रमश: उद्धार तथा लेखन प्रकार का वर्णन है। राम का षडक्षर मंत्र यंत्र में किस प्रकार निविष्ट किया जा सकता है तथा उसका पूजन किस विधि से किया जाता है, इसी विषय का यहां प्रामाणिक प्रतिपादन है। योगी लोग जिस परमात्मा में रमण करते हैं यही राम शब्द के द्वारा अभिहित किया जाता है–

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मनि।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते।।

राम–मंत्र का बीज है–रां और इसी के भीतर देवत्रय तथा उनकी शक्तियों का समुच्चय विद्यमान रहता है। रेफ से ब्रह्मा का, तदनन्तर आकार से विष्णु का तथा मकार से शिव का तात्पर्य माना जाता है और इस प्रकार इन तीनों देवताओं की शक्तियां सरस्वती, लक्ष्मी तथा गौरी इस बीज में विद्यमान रहती हैं–तथैव रामबीजस्थं जगदेतच्चराचरम्।

रेफारुढा मूर्तयः स्युः शक्तयस्तिस्त्र एव च।।

तदनन्तर राम मंत्र के उद्धार का विस्तृत विवरण उपलब्ध होता है। उत्तरतापिनी में राम मंत्र के तारकत्व तथा जप के फल का निर्देश है। प्रणव का अर्थ राम में बड़ी युक्ति से सिद्ध किया गया है। राम के साक्षात्कार करा देने वाले मंत्रों का भी यहां निर्देश मिलता है। राम मंत्र के माहात्म्य का प्रतिपादन कर यह उपनिषद् समाप्त होता है। उपनिषद ब्रह्मयोगी की व्याख्या के अतिरिक्त आनन्दवन नामक ग्रंथकार ने भी बड़ी सुबोध टीका इस ग्रंथ पर लिखी है। यह टीका मूल ग्रंथ के साथ सरस्वती भवन ग्रंथमाला (न. 24) में काशी से 1927 ई. में प्रकाशित हुई है।

12. रामरहस्य उपनिषद-इस उपनिषद का विषय है राम की पूजा प्रतिपादन तथा तदुपयोगी मंत्रों तथा विधानों का विवेचन। राम मंत्र एक अक्षर से आरम्भ होकर इकतीस अक्षरों तक का होता है। इसका पर्याप्त वर्णन यहां मिलता है। इसके अतिरिक्त सीता, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न तथा हनुमान के मंत्रों का भी वर्णन है। राम मंत्र के पुरश्चरण का भी विधान यहां किया गया है।

13. वासुदेवोपनिषद-इसमें वासुदेव की महिमा बतलाकर गोपीचन्दन के धारण करने का विशिष्ट वर्णन है। वैष्णवजनों के मस्तक पर विराजमान त्रिपुण्ड, ब्रह्मादि देवतात्रय, तीन व्याहति, तीन छन्द, तीन अग्नि, तीन काल, तीन अवस्था, प्रणव के तीनों अक्षरों का प्रतीक बतलाया गया है। वासुदेव जगत के आत्मस्वरूप हैं। उनका ध्यान प्रत्येक भक्त को करना चाहिए।

14. हयग्रीवोपनिषद-हयग्रीव भगवान के नाना मंत्रों के उद्धार का प्रकार इस छोटे उपनिषद में विशेष रूप से किया गया है।

वैष्णव उपनिषदों का यही संक्षिप्त वर्णन है। इसके अनुशीलन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैष्णव मत के नाना सम्प्रदायों में जो उपासना विधि इस समय प्रचलित है, उसका मूलरूप हमें यहां उपलब्ध होता है। इन्हीं उपनिषदों के आधार पर ही पिछले मतों का विकास सम्पन्न हुआ है। अत: वैष्णव मत के रहस्यों को भलीभांति जानने के लिए इन ग्रंथ रत्नों का अनुशीलन नितान्त आवश्यक है।

●●●●●

संगत में शुध्द विचार और पंगत मे शुध्द आहार न हो तो छोड़ देने मे ही बुध्दिमानी है।

मेरे धनावंश समाज की वास्तविक स्थिति

• अर्जनुदास स्वामी

आज अपने समाज की स्थिति संगठनात्मक रूप से बहुत दयनीय है एवं इसके लिए जो होना चाहिए वो प्रयास भी नहीं किये जा रहे हैं। अपना धनावंशी समाज बहुत छोटा समाज है। समाज के बुद्धीजीवी लोग एवं समाज के प्रति मन में पीड़ा रखने वाले लोगों को समाज के प्रति सचेत होना चाहिए।

धनावंशी वैष्णव समाज की स्थापना संवत 1532 में भक्त शिरोमणी श्री धनाजी महाराज ने आज से 545 वर्ष पहले की थी। धनाजी महाराज के गुरु श्री रामानन्दजी ने समाज में वैष्णव धर्म को प्रचारित प्रसारित करने के लिए एवं समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करने के लिए अपने शिष्यों को प्रेरित किया। अपना सम्प्रदाय सुदृढ़ रहे इस हेतु महंतीय व्यवस्था बनाकर अनेक महंत गद्दियां स्थापित की। महंत समाज को दिशा दिखाने में एवं सद्कार्य हेतु भगवत–भजन हेतु प्रेरित करते थे। इस प्रकार समाज के लोगों में महंत के प्रति एक विशेष सम्मान व आदर होता था। महंत द्वारा बताए गए मार्ग पर चलकर हमारा समाज आध्यात्मिक क्षेत्र के प्रति सुदृढ़ हुआ। जिससे समाज की एक नई पहचान बनी। उस समय की राजकीय व्यवस्था ने हमारे समाज के शुद्ध आचरण एवं ठाकुरजी के प्रति भक्तिभाव को देखते हुए, ठाकुरजी के मंदिरों में पुजारी नियुक्त किए गए एवं भरण–पोषण हेतु भूमि प्रदान की गई। कालांतर में महंतीय व्यवस्था कमजोर पड़ती गई। जो महंत थे उन्होंने अपने आपको स्वंभू गुरु घोषित करना शुरु कर दिया। चूंकि

संसार की हर चीज को उठाया जा सकता है,
पर गिरी हुई सोच को नहीं।

हमारा समाज कृषि प्रधान समाज है एवं गांवों में रहने वाले लोग थे। महंतों पर आंख मूंद विश्वास करने वाले थे। धीरे–धीरे महंतों ने पंथ प्रवर्तक श्री धनाजी महाराज को भूलाना शुरू कर दिया एवं यह कहना शुरू कर दिया कि हम तो बैरागी हैं, आदि अनादि है, हम तो सतयुग से ही बैरागी है। इस प्रकार से समाज में अनेक भ्रांतिया फैलाई गई। जिससे समाज के लोगों में अनेक प्रकार की शंकाएं पैदा होने लगी। धीरे–धीरे अपने समाज को ब्राह्मण समाज के बराबर लाने के लिए गुरु धनाजी महाराज का तिरस्कार करना शुरु कर दिया तथा अपनी महंतगिरी को सुदृढ़ करना शुरु कर दिया। जैसा कि हम जानते है भक्तिकाल के बाद अनेक वैष्णव पंथ बने उन्हीं में से एक धनावंश है। उस समय के बने हुए अनेक पंथों ने अपने गुरु को सर्वोपरी रखते हुए बहुत प्रगति की और अपने समाज को सुदृढ़ किया। जैसे, विश्नोई समाज, रामावत समाज आदि। इन समाजों के गुरुद्वारे एवं अन्य धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों को संचालित करने हेतु व्यवस्थाओं को देखकर उनकी सामाजिक सुदृढ़ता का पता चलता है। इसी काल में स्थापित हमारा धनावंशी स्वामी समाज आज किस दौर से गुजर रहा है, हम सभी जानते हैं। इसका सबसे बड़ा कारण अपने पंथ गुरु की अवेहलना करना है। मुझे यह लिखते हुए बड़ी शर्म महसूस होती है कि हम आज भी इस बात पर तर्क–वितर्क करते है कि हमारा अतीत क्या था और पंथ के गुरु कौन थे? समाज के 80 प्रतिशत लोग आज भी नहीं जानते कि हमारे पंथ के गुरु कौन है? इसमें समाज के सीधे–साधे लोगों का दोष नहीं। उन्हें किसी ने ठीक से बताया भी नहीं होगा। आज अपने समाज की स्थिति संगठनात्मक रूप से बहुत दयनीय है एवं इसके लिए जो होना चाहिए वो प्रयास भी नहीं किये जा रहे हैं। अपना धनावंशी समाज बहुत छोटा समाज है। समाज के बुद्धीजीवी लोग एवं समाज के प्रति मन में पीड़ा रखने वाले लोगों को समाज के प्रति सचेत होना चाहिए। तहसील स्तरीय एवं संभाग स्तरीय समितियां बनाकर नियमित बैठकें की जाये एवं अपने समाज की एक केंद्रीय संस्था का गठन किया जावे एवं धनावंशी समाज तीर्थ क्षेत्र सर्व सम्मति से स्थापित किया जाये एवं गुरु महाराज धनाजी को सर्वोपरी आदर एवं सम्मान के साथ स्थान दिया जाये। संगठनात्मक कार्य शीघ्रता से किया जाये एवं आपसी विवादों को भूलाकर समाज हित में ऊर्जावान एवं समाज हितैषी लोगों को तत्परता से लगाना चाहिए।

जहां बात आती है धनावंशी स्वामी समाज की–– तो हमारा समाज अलग–अलग हिस्सों में बंटा हुआ दिखाई देता है– ये वर्ग हैं– कमजोर वर्ग, धनाढ्य वर्ग एवं शिक्षित वर्ग। इन तीनों ही वर्गों में वास्तव में देखें तो सामंजस्य का काफी अभाव है। जब तक तीनों वर्गों का आपस में सामंजस्य नहीं होगा, तब तक सारी बातें ऊपर से निकल जाती है। अभी हमारा समाज–– सामाजिक सरोकार एवं समाज व्यवस्था के तीव्र विकास में बहुत धीमा है।

धनावंश को बदलने के लिए 50 दूरदर्शी––उत्साही और लगनशील लोगों को सक्रिय होने की आवश्यकता है। जरूरी नहीं है कि वे सभी पैसे वाले हों। धनावंश के उत्थान में बाधा केवल शैथिल्य और उत्साहहीनता की है। उन पचास उत्साही जनों में क्या आप अपने को भी मानते हैं? अगर इस तथ्य पर आप विचार ही नहीं करते हैं,तो समाज के लिए आपका पैदा होना, न होना एक बराबर है। न आपका जीना ही सार्थक बन पाया।

जिन्दगी एक ऐसा रंगमंच है,जहां खुद इंसान को पता नही अगले दृश्य क्या होगा?

आलेख

चेतन स्वामी

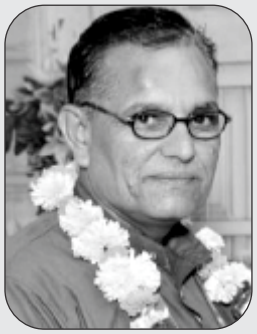

धनावंश में परमात्म प्राप्ति

विभिन्न प्रकार के सुख और ऐश्वर्य में फंसकर व्यक्ति ईश्वर से विमुख हो जाता है। और ईश्वर विमुखता बड़ी दुखदाई होती है। क्योंकि किसी भी प्राणी के जन्म धारण करने का मूल उद्देश्य तो उच्च स्थिति की प्राप्ति ही तो है।

परमात्मा की प्राप्ति किसी चमत्कार से संभव नहीं है। बिना प्रभु शरणागति के उसे प्राप्त करना कोई हंसी खेल नहीं है। जो व्यक्ति ब्रह्म के मार्ग में प्रतिष्ठित नहीं हो सका, उसकी तो गति संभव नहीं है। धनावंश के प्रवर्तक श्रीधनाजी महाराज कोई सामान्य व्यक्ति नहीं थे उन्होंने मन, कर्म और वचन को परमात्मा के प्रति समर्पित कर दिया था। उनके कर्म चिन्मय हो चुके थे, क्योंकि प्रतिक्षण वे अपने को मनसा, वाचा और कर्मणा परमात्मा को ही भजते थे। जो व्यक्ति माया के प्रपंचों और प्रबंधों में उलझ जाता है वह एकनिष्ठ भक्ति नहीं कर पाता। जो सदाचारी नित्य प्रति मानस में प्रभु की ही लगन लगाए रखता है, वही दिव्य तथा पुण्यशाली है। धनाजी महाराज ऐसे पुण्यशाली लोगों में से एक थे। यह कहा जाता है कि अनेक जन्मों के अभ्यास से आत्म सिद्धि प्राप्त होती है और धनाजी महाराज के बारे में भी यही प्रसिद्ध है कि वे भगवान बलि के अवतार थे। इसलिए उन्हें भगवत प्राप्ति में कोई अधिक कठिनाई नहीं हुई। कठिनाई तब होती है जब व्यक्ति योग से विचलित हो जाता है। विचलित तथा व्यथित व्यक्ति को भगवद प्राप्ति संभव नहीं है। जो अकल्याण के मार्ग पर चलना प्रारंभ करता है उसका तो कल्याण संभव ही नहीं है। धनाजी महाराज के जीवन वृत्त को देखते हैं, तो वहां पाते हैं कि वे किसी पर संशय करते ही नहीं थे। सँशयहीन हो जाना कम मुश्किल नहीं है। जब बाल्यकाल में एक संत ने यह कहा कि तुम्हें जो

कल समय मिलेगा ....यही कितना बड़ा भ्रम है।

शालिग्राम प्रदान कर रहे हैं, यह भगवत स्वरूप ही है। धनाजी ने पंडित की इस बात पर जरा भी अभरोसा नहीं किया। कहा भी जाता है कि संशयात्मा विनश्यति संशय से आत्मा का विनाश होता है। और धनाजी ने भगवत प्राप्ति के मार्ग में संशय को तनिक भी अपने निकट नहीं फटकने दिया। यही कारण है कि उनके सभी सांसारिक कार्य स्वतः ही फलित होते गए। हम भले ही उन कार्यों को किसी चमत्कार की श्रेणी में रखते रहे हैं, पर धनाजी के लिए तुम्बों में से निकलने वाले मोती कोई आश्चर्य नहीं था। हां टोंक के नवाब के लिए अवश्य यह एक अचंभे में डाल देने वाली घटना थी। किंतु, भक्त जानता है कि जो परमेश्वर के अधीन हो जाता है, जिसकी भगवत शरणागति हो जाती है। वहां सब कुछ चमत्कार ही है। धनाजी महाराज अपने जीवन में केवल एक ही बात को सोचते थे कि मेरे द्वारा कोई ऐसा अपराध न हो जाए जिससे मैं प्रभु की मैत्री से वंचित हो जाऊं। उनका प्रेम भगवान के साथ मैत्री का यानी अटल मित्रता का था। वे भगवान को अपना मित्र जानकर निश्चिंत हो गए थे। उनके सारे कार्य उनके मित्र परमात्मा ही संपादित किया करते थे। स्वयं, भगवान का कथन है कि तुम मेरी मैत्री में निश्चिंत हो जाओ। मेरे प्रति निश्चिंत हो जाने वाले को मैं सभी तरह से अलंकृत कर देता हूं। अलंकरण भक्ति का भी होता है। और वैभव का भी। हम धनाजी के जीवन पर दृष्टिपात करते हैं तो देखते हैं कि उनका जीवन सर्वथा निश्चिंतता और निर्भयता पर टिका हुआ था। धनाजी का जीवन परमात्मा की आज्ञा और गुरु सन्निधि पर पूर्णतया निर्भर था। गुरु के वचन उनके लिए शिरोधार्य थे। लोह की लकीर थे। गुरु रामानंदजी ने उनकी भक्ति से प्रसन्न होकर, उन्हें यह आदेश प्रदान किया कि तुम्हें अपने जाति वर्ग में भगवत भक्ति की स्थापना करनी है। बताओ कल्याणकारी इस गुरु आज्ञा को वे कैसे नकार देते? धनाजी ने तनिक भी संशय नहीं किया गुरु आज्ञा पर और धनावंश जैसे वैष्णव पंथ की स्थापना कर डाली। उन्हें किसी पंथ स्थापना की आवश्यकता नहीं थी। किंतु, गुरु ने कहा धर्म बचाना और इसकी वृद्धि भी करनी है, गुरु कह रहे हैं तो कुछ सोचकर और कल्याणप्रद है इसलिए कह रहे हैं। तब धनावंश की स्थापना से वे कैसे मुकरते? धनावंश की स्थापना के पीछे उनकी यह मंशा भी थी कि मेरे सभी अनुयायी भगवत प्रेरणा से भावित होकर, भक्ति के मार्ग पर चल पड़ेंगे। पंथ की स्थापना से ये सभी जो धार्मिक अवधारणाओं से अनभिज्ञ हैं, धर्म अनुप्राणित आचरणों से संवलित होकर सदाचार के मार्ग पर चलना प्रारंभ कर देंगे। और उनकी यह सोच सही निकली। धनावंश में शामिल लोगों ने वैष्णव धर्म ब्रत धारण किए। धर्म मार्ग पर चलनेवाले व्यक्ति के लिए परमात्म प्राप्ति कठिन नहीं है। विभिन्न प्रकार के सुख और ऐश्वर्य में फंसकर व्यक्ति ईश्वर से विमुख हो जाता है। और ईश्वर विमुखता बड़ी दुखदाई होती है। क्योंकि किसी भी प्राणी के जन्म धारण करने का मूल उद्देश्य तो उच्च स्थिति की प्राप्ति ही तो है। और वह उच्च स्थिति मोक्ष के अलावा दूसरी क्या हो सकती है? धनाजी का बताया हुआ मार्ग, हर धनावंशी के लिए उद्धार का मार्ग है। साधपन का सेवन ही धनावंश का मुख्य उद्देश्य है।

इस मायामय संसार में फस कर हमें अपने पंथ की गरिमा को किसी भी प्रकार खोना नहीं है। यह संकल्प प्रत्येक धनावंशी का लेना चाहिए। बहुत सारे साधनों को कपनाने की आवश्यकता नहीं है। मन में सतत प्रभु चिंतन रहेगा तो अलौकिक और पारलौकिक अभ्युदय होना तय है।

●●●●●

मुझे मेरी कमियाँ देखनी है, कोई अपनी नज़र उधार दे दो।

आलेख

अपने पंथ को समझें

• सीतारामदास परिव्राजक

संसार में मनुष्य के लिए चार उपलब्धियां प्रमुख होती हैं। क्योंकि मनुष्य के सिवाय अन्य योनियों को इनका ज्ञान ही नहीं होता है। जिनमें से दो तो कर्मजन्य हैं, तथा दो प्रारब्धजन्य हैं।

अर्थ व काम दोनों पुरुषार्थ प्रारब्धजन्य हैं। पूर्व कर्मों के फल स्वरूप प्राप्त होनेवाली उपलब्धियां हैं। जो कि स्वतः जन्म के पहले ही तय होने लगती हैं। तथा जन्म से पहले निश्चित हो कर जन्म उन्ही उपलब्धियों के अनुसार, ग्रह तथा नक्षत्रों में होता है। उसी प्रारब्ध का फल रूप में जो सुख दुःख होता है, वह चाहते, न चाहते हुए भी भोगना ही पड़ता है।

धर्म व मोक्ष, ये दो उपलब्धियां पुरुषार्थ से प्राप्त होनेवाली हैं। इनके लिए प्रारब्ध को कोसना या प्रारब्ध के भरोसे रहना, मूर्खता या अज्ञानता ही है।

ये चारों उपलब्धियां– जिन्हें हम पुरुषार्थ चतुष्टय भी कहते हैं। अर्थ,काम,धर्म व मोक्ष क्रमशः एक से एक महत्वपूर्ण हैं। सभी मनुष्यों के लिए मोक्ष अंतिम उपलब्धि है,और इसे प्राप्त करना जरूरी होता है। क्योंकि मोक्ष ही संसार की सर्वोपरि उपलब्धि है। इसकी प्राप्ति के बिना हमारा, संसार की नाना प्रकार की योनियों में आने जाने के चक्कर से छुटकारा नहीं मिल पाता। यह भगवान का बनाया हुआ विधान है।

भगवान् का ही बनाया हुआ खेल है। समझने पर तो सब भगवत स्वरूप ही है। संसार, भगवान की अपरा प्रकृति है। जीव, परमात्मा की परा प्रकृति होते हुए भी संसार की तरफ आकर्षित होकर खुद संसार का हो जाता है। संसार के सुख दुःख का भोगी हो जाता है। संसार दुःखालय है।

हमारे गुरु श्रीधनाजी महाराज के सिद्धांतों का हमारे पूर्वजों ने अनुकरण किया। जिसके फलस्वरूप चारों उपलब्धियां श्रेष्ठतम् भगवद्भक्ति रूपी एक ही मार्ग से प्राप्त होनेवाली हैं। भक्त धनाजी महाराज को एक ही विधि से सब प्राप्त हुआ्। वह विधि है, समर्पण। जिसके कारण भगवान ने उनके हाथ का भोजन पाया,उनकी गाय चराई,उनके खेत का काम सम्भाला। वे जीवन मुक्त थे। यह भी कोई आश्चर्य नहीं है, क्योंकि उन्होंने हम जैसे अनजान लोगों को भी परमात्मा के अनुयायी वैष्णवों के साथ बैठने का स्थान भी दिलवाया। धनावंशी– पद प्रदान करके भक्ति पंथ में प्रतिष्ठित किया। सभी समाजों के नाम अपने जन्मदाता या जन्मदाता के गुणों के सम्बन्ध से ही होते हैं। जैसे जसनाथजी सिद्धि प्राप्त थे, उनके अनुयायी सिद्ध कहलाए। पाराशर ऋषि से पारीक ब्राह्मण कहलाये। सरस मुनि के अनुयायी सारस्वत हुए।पीपाजी के अनुयायी पीपावंशी कहलाए्। कबीरजी के कबीर पंथी हैं। जिनमें कोई शंका करने की जगह ही नहीं बचती है।

मेरा आप सबसे निवेदन है कि कोई वस्तु या कोई उपलब्धि सस्ती कीमत में या बिना मेहनत के या बिना मोल के या बिना तपस्या के किसी को प्राप्त हो जाती है, तो उसका सदुपयोग कम ही लोग कर पाते हैं। यहां तक कि बिना इच्छा के भगवान भी घर आए तो नहीं सुहाते हैं।

हमें धनावंशी पद (वैष्णव) बहुत ही सस्ते मोल में या कहें कि बिना मोल ही प्राप्त हुआ्। जिसके फलस्वरूप हम इतने बड़े पद देनेवाले को ही भूल गये। किसी को यह पता भी नहीं रहा कि हमें ऐसा सर्वोत्तम पद किसने दिया। जिस दास सम्बोधन के लिए बिरला जैसे धनाढ्य लालायित रहते हैं, हमें सहज में प्राप्त हुआ्। हम अज्ञानावरण कब हटाएंगे ?

चर्चा और निन्दा यह केवल सफल व्यक्तियों के भाग्य में होती है, इसलिए सफर जारी रखिये।

आलेख

धनावंशी समाज की प्राथमिकता

अशोक सिंवर शेरेरां
(अध्यापक)

भक्त धन्नाजी द्वारा स्थापित धनावंशी समाज जिसे भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न नाम से जाना जाता है, यथा- स्वामी, बैरागी, साध आदि। धनावंशी समाज अधिकांशतः ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। कुछ गिने-चुने गाँवों में तो समाज बहु संख्यक है। शेष गाँवों में धनावंशी समाज की संख्या बहुत ही कम है। इस कम संख्या के कारण समाज संगठित भी नहीं है और न ही समाज का आवश्यक विषयों में विकास हो पा रहा है। धनावंशी समाज के विकास के लिए कुछ कार्य जो प्राथमिकता से किये जाने चाहिए,वे इस प्रकार के हो सकते हैं- यथा-

1. धन्नावंशी महासभा का गठन- किसी भी समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर होने के लिए आवश्यक है कि समाज एक जाजम पर बैठे। इस हेतु धनावंशी महासभा का गठन अति शीघ्र किया जाना अत्यंत आवश्यक है, ताकि समाज की प्रगति के लिए नवीन प्रयास किये जा सकें्। महासभा के द्वारा समाज में विभिन्न विकासात्मक कार्य होंगे और नवजागृति के साथ समाज आगे बढेगा।

2. महंतद्वारों का पुनर्जागरण- धन्नावंशी समाज के सभी महंत द्वारों का पुनर्जागरण आवश्यक है, ताकि महंतों के द्वारा समय-समय पर आवश्यक समाज सुधार हेतु कार्य किये जा सकें।

3. कुरीतियों पर पाबंदी- समाज मे व्याप्त विभिन्न कुरीतियों यथा- दहेज प्रथा, मृत्युभोज, बाल विवाह आदि पर समाज को मिलजुल कर पाबंदी लगानी चाहिए, ताकि समाज का कमजोर वर्ग आर्थिक और सामाजिक रूप से परेशान न हो और समाज प्रगति कर सके।

4. विद्यादान योजना- समाज के कई परिवार आज भी अपने होनहार विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा दिलाने में असमर्थ हैं। धनावंशी समाज को चाहिए कि समाज के आर्थिक रूप से सक्षम महानुभाव मिल कर एक विद्यादान कोष का गठन करें, ताकि जरूरतमंद विद्यार्थियों के उच्च अध्ययन की व्यवस्था की जा सके।

5. लाइब्रेरी और कोचिंग व्यवस्था- धनावंशी समाज द्वारा संचालित विभिन छात्रावासों में निवास कर रहे विद्यार्थियों के लिए उच्च गुणवत्ता की लाइब्रेरी की व्यवस्था समाज द्वारा की जानी चाहिए और साथ ही कम से कम राज्य स्तर पर एक कोचिंग संस्थान भी स्थापित करना चाहिए जिसमे प्रशासनिक सेवा की भर्ती हेतु विद्यार्थियों को बहुत ही कम शुल्क या निःशुल्क कोचिंग उपलब्ध करवाई जा सके।

6. रक्तदाता समूह का गठन- धनावंशी समाज को संभाग स्तर पर युवाओं का रक्तदाता समूह भी गठन करना चाहिए ताकि जरूरतमंद को विकट परिस्थिति में संभाग स्तरीय चिकित्सालयों में रक्त की व्यवस्था हेतु किसी की सहायता हेतु मुहँ नहीं ताकना पड़े।

उपरोक्त सभी कार्य योजनाओं को सफलता से संचालित करने के लिए हमें सर्वप्रथम धनावंशी महासभा का गठन करना चाहिए ताकि शेष कार्यक्रम महासभा के अन्य अंगों के रूप में कार्य कर सके। समाज सभी के संगठन का ही रूप होता है। जैसे तुलसी का पौधा तो घर घर होता है परन्तु एक साथ असँख्य तुलसी के पौधे लगाने से ही वृंदावन बनता है, और वृंदावन में ही श्री ठाकुरजी निवास करते हैं। यथा-

अल्पानामपि वस्तूनां संहतिः कार्यसाधिका।
तृणै र्गुणत्वमापन्नै र्बध्यन्ते मत्तदन्तिनः ।।

अर्थात- अल्प वस्तुओं का पुंज भी कार्य निपटाने वाला बन जाता है। तिनके जब रस्सी बन जाय, तो उससे मत्त हाथी भी बाँधे जा सकते हैं।

कर्म बिना पूछें और बिना बताये ही दस्तक देता है,
क्योंकि वो चेहरा और पता दोनों ही याद रखता है।

आपके पत्र–आपकी भावनाएं

यह था एकादशम् अंक

धनावंसी हित पत्रिका का प्रथम वर्ष पूरा होनेवाला है। पत्रिका से प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष जुड़े हुए सभी धनावंशी बन्धुओं का अभिनन्दन। जैसा कि परिलक्षित हो रहा है और स्वयं सम्पादकजी भी घोषणा कर चुके हैं कि यह पत्रिका और ग्रुप अभी बन्द करना है । ऐसे में ग्रुप का बन्द होना कोई विशेष बात नही है, क्योंकि आज के तकनीकी युग में एक ग्रुप बन्द होता है, तो दो ग्रुप चालू हो जाते हैं। ग्रुपों के चालु रहने से कोई फायदा और बंद होने के कोई विशेष नुकसान नही है। लेकिन पत्रिका समाज हित में है। पत्रिका विचारों के आदान प्रदान का सशक्त माध्यम है। यह ज्ञान वर्धक भी है। साहित्य समाज का दर्पण होता है। परंतु परिस्थितियां अनुकूल ना हो तो इसकी निरन्तरता सम्भव नहीं। समाज की पत्रिका प्रकाशन का निर्णय लिया गया था,वह अच्छा था और साकार भी हुआ्। पाठ्य सामग्री रोचक, ज्ञान वर्धक और समाज में अपनत्व का बोध कराने वाली तथा समाज हित की बातों से परिपूर्ण थीं्। जैसा कि समाज की पत्रिकाओं में होता है। कुछ चिंतनशील लोगों ने पत्रिका के माध्यम से समाज की वर्तमान स्थिति पर चिंता जताने में कोई कसर नही रखी। बाद में कुछ गिने चुने लोग इसे चलाने के लिए पूरे साल प्रयासरत रहे। शुरुआत के कुछ समय बाद ही महामारी फैल गई और लोकडाउन लग गया, जिससे सब कुछ बाधित हुआ और पत्रिका प्रकाशन भी। लेकिन उस दौरान ग्रुप में सक्रियता ज्यादा बढ गई और सबने जमकर लिखापी, वैचारिक आदान प्रदान, बौद्धिक तकरार ओर समाज हित की बातें की। पत्रिका और ग्रुप से प्रेरित होकर कुछ उत्साही और समाज हितैषी बंधुओ ने धुँवा कलां की यात्रा की । उनकी पद यात्रा गाँधी जी की दांडी यात्रा से कम नही । पत्रिका से प्रेरित होकर कुछ युवाओं ने समाज की वेबसाइट बनाकर जानकारी अपलोड की और समाज को एक नया प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाया जो सराहनीय है, भविष्य में उपयोगी साबित हो सकता है। इस प्रकार एक साल का सफर तय करके अभी आखरी पड़ाव पर यह समीक्षा कर रहे हैं कि पत्रिका बन्द होने की कगार पर क्यों है? समाज की पत्रिका केवल कुछ विज्ञापन दाताओं के सहारे नही चलती, ज्यादा लोगो का तन मन से जुड़ाव होना जरूरी है। ख–केवल लेखकों से पत्रिका नही चलती, पाठक जरूरी होते हैं। पने की रूचि लोगों में कम है और समय की कमी है। पत्रिका निकालना एक बहुत चुनौती भरा काम है, इसके लिये शारिरिक, मानसिक, आर्थिक और बौद्धिक क्षमता जरूरी है। बन्द होने का यह भी कारण है कि लोग इसकी जरूरत और उपयोगिता महसूस नहीं कर रहे। आजकल लोग प्रेक्टिकल हो गये हैं। इसलिए फायदा लगे वह काम अपने आप कर लेते हैं। और जो अनुकूल नहीं हो तो किसी के कहने से भी नही करते। पत्रिका के माध्यम से समाज मे व्याप्त विसंगतियों को कोसते रहने से कोई नहीं सुधरेगा, इसलिए हर व्यक्ति स्वयं अपना सुधार करे तो समाज सुधर जाएगा। समाज का एक वर्ग ऐसा है जो पत्रिका से सरोकार नहीं रखता, इसमें प्रकाशित विचारों से सहमत नहीं है। उसे लगता है कि उस पर सम्पादक की विचारधारा को थोपा जा रहा है। पत्रिका समाज की सूचनाओं और विचार विमर्श का माध्यम है, उपदेशात्मक ग्रन्थ नही। लोगों को उपदेश पसंद नही है। कुछ मुद्दे जैसे डोलीभूमि, महन्त व्यवस्था, पन्थ प्रवर्तक, आदि एक सामान्य धनावंशी की पीड़ा नही है। या वह इसे महसूस नही करता। जब तक हर व्यक्ति इन मुद्दों के प्रति जागरूक नही होगा तब तक कोई सुधार नहीं हो सकता। क्योकि सुधार से पहले यह समझना जरूरी है कि बिगाड़ क्या हुआ्। तभी सुधार की बात करेंगे और एक सामान्य धनावंशी को लगता है कि समाज मे कुछ भी नहीं बिगड़ा हुआ है। सब कुछ सामान्य है या अपेक्षाकृत बेहतर है। सारांश ये है और मेरा मानना है कि समाज की पत्रिका अगर सम्भव हो तो निरन्तर रखें लेकिन उपरोक्त बातों को मद्देनजर रखकर।

-बृजदास स्वामी, गुसांईसर बड़ा

संबंधों को हमेशा समय की नहीं, समझ की जरूरत होती है।

माननीय संपादक महोदय, आपकी मेहनत और समाज हितेषी भाव को प्रणाम। श्रीधनावंशी हित पत्रिका का अक्टूबर महीने का अंक पढ़ा। बहुत ही सुन्दर संपादन किया गया है। पत्रिका में धनावंश में व्याप्त विसंगतियों की विवेचना की गई है। वहीं यथार्थ से भी रूबरू करवाया गया है। धनावंशी बन्धुओं की गुरुधाम धुंआ कला की यात्रा के समाचार प्राप्त हुए। यह पत्रिका हर धनावंशी का ज्ञान वर्धन करने में बहुत उपयोगी है। वैष्णव दर्शन और विशिष्टाद्वैतवाद को बहुत सुंदर तरीके से समझाया गया है। तीर्थ की महत्ता और पूजा अर्चना का महत्व भी बताया गया है। पत्रिका में रामानंद जी के विषय में पढ़ने को मिला। समाज के माननीय गणपत दासजी के द्वारा अभिमानी बेटों के विषय में बताया गया। अपने माता पिता की कद्र ना करना बेशक निंदनीय है। समाज के और भी महानुभावों से निवेदन है कि वे भी अपने अनुभव साझा करते रहें। सह संपादक प्रशांतजी ने भी समाज के संगठन पर बल दिया और अपनी समाज हितेषी भावनाएं प्रकट की।समाज के विशिष्ट सम्मानीय सज्जनों का मैं ह्रदय से आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने पत्रिका के आर्थिक सहयोग हेतु विज्ञापन दिए। श्री रघुवीर आनंद जी ,सुखदेव जी नथमल जी,गोपाल जी पालास आप सभी समाज हित के कार्य में अपना सहयोग दे रहें हैं। आप हमारे लिए विशिष्ट हो। आपके सहयोग की सदैव आकांक्षा रखते हैं।समाज के और भी सक्षम सज्जनों से अनुरोध करता हूं कि वे भी अपने विज्ञापन दें। ठाकुर जी कीकृपा से आपका अनुष्ठान उतरोतर प्रगति करे। जय ठाकुर जी की।

-श्रीधर स्वामी, सुजानगढ़

आदरणीय चेतनजी द्वारा संपादित धनावंशी हित पत्रिका के दोनों ही अंक बहुत ही सुंदर और पठनीय हैं। श्री धनावंशी हित पत्रिका प कर अनुभूति होती है कि अभी भी धनावंशी अस्तित्व मौजद है। श्री धनावंशी हित पत्रिका सही अर्थ में समाज हित मे है। सभी बन्धुओं से अनुरोध है कि पत्रिका निरंतर समाज तक पहुंचे और यह दीर्घ जीवी बने।

-रघुवीर स्वामी, अहमदाबाद

समाज को एकजुट करने के आपके प्रयासों को नमन। जहां हम समाज की बात करते हैं, तो समाज का तात्पर्य होता है, समाज बंधुओं के विकास (शिक्षा, स्वास्थ्य, बौद्धिक, आर्थिक एवं सामाजिक)में परस्पर सहयोग का एक बंध या घेरा तैयार कर विभिन्न सम्भावनाओं का बेहतर सदुपयोग करना एवं समाज को उन्नति के पथ पर अग्रसर करना। जहां बात आती है धनावंशी समाज की तो समाज अलग–अलग हिस्सों में बंटा हुआ है कमजोर वर्ग, धनाढ्य वर्ग एवं शिक्षित वर्ग। इन तीनों वर्गों में वास्तव में देखें तो सामंजस्य का काफी अभाव है। जब तक तीनों वर्गों का आपस में सामंजस्य नहीं होगा तब तक सारी बातें ऊपर से निकल जाती है। यहां तो यह तक होता है कि जब किसी समाज बंधु के सहयोग की बात आती है तो हमारे गणमान्य समाजबंधु फोन तक नहीं उठाते । ये घटनाएं कई बार मेरे साथ भी घटित हूई है। अभी हमारा समाज समाजिक सरोकार एवं समाज व्यवस्था के तीव्र विकास में बहुत धीमा है। इतना जल्द मनोवृत्ति में परिवर्तन होना सम्भव नहीं है।

-राजेन्द्र स्वामी, लालगढ़

धन्नावंशी हित पत्रिका का पिछला अंक पढ़ा। बहुत ही अच्छा लगा। डोली मुद्दे पर ज्ञान चर्चा व समस्या के बारे में काफी विस्तार से लिखा गया है। समाज के काफी सदस्यों ने अपने अपने विचार रखे हैं। धनावंशी हित पत्रिका का बेसब्री से इंतजार रहता है।

-बस्तीराम स्वामी, मेड़ता सिटी

आँखे भी खोलनी पड़ती है उजाले के लिये,
केवल सूरज के निकलने से ही अंधेरा नहीं जाता।

श्री धनावंश हित में विज्ञापन सहयोग करने वाले धनावंशी बंधु

1. श्री रामचंद्र स्वामी, स्वामियों की ढाणी
2. श्री रघुवीर आनन्द स्वामी, अहमदाबाद
3. श्री सुखदेव स्वामी, अहमदाबाद
4. श्री लक्ष्मणप्रसाद स्वामी, पलसाना
5. श्री पदमदास स्वामी, बीदासर
6. श्री गोपालदास स्वामी, पालास
7. श्री गोविन्द स्वामी, हैदराबाद
8. श्री श्रवणकुमार बुगालिया, दिल्ली
9. श्री भागीरथ बुगालिया, दिल्ली
10. श्री गोपालदास महावीर स्वामी, थावरिया
11. श्री बृजदास स्वामी पुत्र श्री सीतारामदास परिव्राजक, सूरत
12. श्री ओमप्रकाश स्वामी, पाली
13. डॉ. घनश्यामदास, नोखा
14. श्री मनोहर स्वामी, अजीतगढ़
15. श्री गुलाबदास स्वामी, जोधपुर
16. श्री बनवारी स्वामी, स्वामियों की ढाणी
17. श्री त्रिलोक वैष्णव, जोधपुर

उपरोक्त सभी धनावंशी बंधुओं का आभार। अन्य जनों से भी निवेदन है कि इस पत्रिका के सुचारु प्रकाशन हेतु अपना विज्ञापन सहयोग प्रदान कर कृतार्थ करें।–प्रकाशक

पत्रिका के विशिष्ट सहयोगी

सांवरमल स्वामी, आबसर
अर्जुनदास स्वामी, हरियासर
देवदत्त स्वामी, सूरत
लालचन्द स्वामी, धोलिया
बजरंगलाल स्वामी, लालगढ़
प्रेमदास स्वामी, खिंयाला

श्री धनावंशी हित

यह पत्रिका धनावंशी समाज की एकमात्र पत्रिका है। कृपया इसके प्रचार–प्रसार में अपना योगदान प्रदान करें।

- पत्रिका में विज्ञापन, बधाई संदेश, सूचना, समाचार तथा रचनाएं भिजवाकर अनुगृहीत करें।
- यह अंक आपको कैसा लगा? अपनी राय से अवगत करवायें।
- पत्रिका का सालाना शुल्क 200/– रुपये है। कृपया सदस्य बने।
- **पता–श्री धनावंशी हित, धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़–331803 (बीकानेर) * मो.: 9461037562**

धनावंश का उत्थान शिक्षा से

–विकास स्वामी, कपूरीसर

कोई भी समाज तभी उत्थान कर पाता है, जब उसका चारित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास हो। और यह संभव है, स्तरीय शिक्षा के बल पर। प्रत्येक जाति के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता आया है। हमारा धनावंशी संप्रदाय एक धार्मिक पंथ है। विष्णु पूजक। हमेशा से ही ठाकुरजी में प्रीति रखने के कारण धनावंश का खान–पान और आचार–व्यवहार हमेशा सात्विक रहा है। जिससे धनावंश अध्यात्मिक और नैतिक मूल्योंपर समाज की अग्र पंक्ति में गिना जाता है। परन्तु, वर्तमान में युवा पीढी भटक रही है। इसलिये हम सब की नैतिक जिम्मेदारी है कि हम अपने बच्चों को मूल्यवान शिक्षा प्रदान करें। धनावंश की सबसे बड़ी समस्या है, शिक्षा के प्रति जागरूकता का अभाव। क्योंकि हमारा समाज ज्यादातर ग्रामीण क्षेत्र से सम्बन्ध रखता है। अनेक कारणवश ग्रामीण बच्चों को पर्याप्त शिक्षा नहीं मिल पाती, फलस्वरूप ग्रामीण क्षेत्र के बालक पूर्ण योग्यता के साथ आगे नहीं बढ़ पाते। प्राथमिकता से धनावंशी बंधुओं को इस ओर ध्यान देना चाहिए। धनावंश को शिक्षा के साथ ही राजनीतिक जागरूकता पर भी ध्यान देना चाहिए, राजनीतिक आकाश में हमारी उपस्थिति न के जैसी है। और भी बहुत मुद्दे हैं, जिन पर धनावंशी बंधुओं को बहुत सोचने विचारने की आवश्यकता है। और उन मुद्दों को कार्य परिणत करने की भी आवश्यकता है। धनावंश को अपना गौरवशाली इतिहास संजोकर अपनी पहचान स्थापित करनी चाहिए।

सदस्यता शुल्क एवं अन्य भुगतान निम्न खाते में करें।

Dhanavanshi Prakashan
A/c No. - 38917623537
Bank - State Bank of India
Branch - Sridungargarh
IFSC code - SBIN0031141

प्राण जाने के बाद शरीर शमशान में जलता है, लेकिन संबन्धों में से प्रेम चला जाये तो इंसान मन ही मन जलता है।

JM BOYS HOSTEL

सीएलसी के पीछे, विकास कॉलोनी, सीकर (राज.)

सुरक्षित आवास व्यवस्था (सुविधाएं)
ब्रेकफास्ट, लंच व डिनर की सुविधा • वाई-फाई की सुविधा
बाथरूम में गीजर की व्यवस्था • ठंडे व आर.ओ. वाटर की सुविधा
पर्सनल अलमारी सुविधा • 24 घण्टे लाईट • घर जैसा वातावरण।

झाबरमल स्वामी • मो.: 9829265655

Kishan Lal Swami
Padam Swami
Govardhan Swami
M.: 9887621371
9602013462

POOJA CONSTRUCTION CO.

Village-Dolatpura, Post Hathideh, Tehsil-Srimadhopur (Sikar)

पंचायत राज विभाग में निर्माण कार्य एवं सप्लाई का 5 वर्षीय अनुभव

A Business Associate of

Ambuja Cement

सुरेश कुमार स्वामी
भगवतीप्रसाद स्वामी

सरस

M.: 7240436007
9680780619

दौल्या की ढाणी BMC दु. उ. सहकारी समिति लि.

ओम फूड्स एण्ड मावा पनीर भण्डार

हमारे यहाँ पर शुद्ध दूध, मावा, पनीर,
देशी घी उचित रेट पर मिलता है।
दौलतपुरा (हाथीदेह), जिला-सीकर (राज.)

Barros

Tel. : 011-22078677
M.: 98118-44777
98730-89730

Ramchandra Swami
Swamiyon Ki Dhani

RAJDHANI SALES
Mfrs. of All Kinds of Kids Wear

IX/403, Gali No. 03, Ram Nagar Market, Gandhi Nagar, Delhi-110031 (India)

If Undelivered Return To
सम्पादक : श्री धनावंशी हित
धनावंशी प्रकाशन
कालू बास, पोस्ट : श्रीडूंगरगढ़-331803
जिला-बीकानेर (राज.) मो.: 9461037562

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, सम्पादक चेतन स्वामी द्वारा धनावंशी प्रकाशन, कालू बास, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा प्रकाशित एवं महर्षि प्रिण्टर्स, श्रीडूंगरगढ़ द्वारा मुद्रित ।